SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 1
June-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2022

रु.5/-

वज्र-कवच समर्पण (12.06.2022)

मोती-कवच समर्पण (13.06.2022)

स्वर्ण-कवच समर्पण (14.06.2022)

तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

(दि. 12.06.2022 से दि. 14.06.2022 तक)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

आं.प्र. राज्य सरकार की ओर से दि. 15.04.2022 को ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडराम स्वामीजी के ब्रह्मोत्सव के अंतर्गत कल्याणोत्सव के अवसर पर माननीय आं.प्र. मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने रेशमी वस्त्र और मोतियों के अक्षतों के समर्पित करते हुए इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने अपनी धर्मपत्नी के साथ और अन्य उच्च अधिकारीगण ने भी भाग लिया।

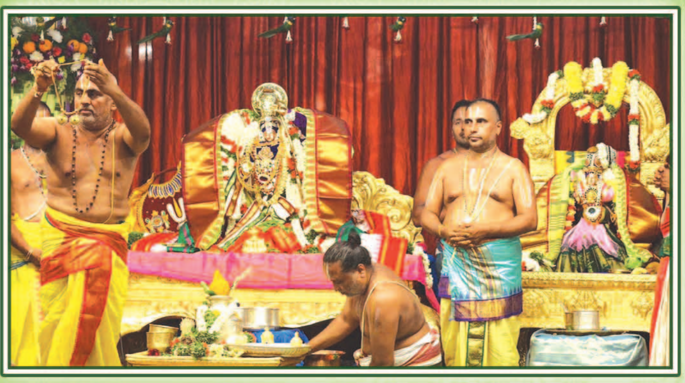

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३५)

हे मधुसूदन! इनके मुझे मारने पर भी अथवा तीनों लोकों के राज्य के लिए भी मैं इनको मारना नहीं चाहता। ऐसी हालत में भूलोक राज्य के लिए अलग रूप से कहना ही क्या है?

सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वदेवमयो हरिः।
सर्व तीर्थमयी गंगा सर्व वेदमयो मनुः।।

(- गीता मकरंद, गीता की प्रशस्ति)

गीता सभी शास्त्रों की स्वरूपिणी है। विष्णु सर्वदेवमय है। गंगा सभी तीर्थमयी है। मनु सर्व वेद स्वरूप है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति
अपने ही घर में पाइए

सप्तगिरि मासिक
पत्रिका के लिए चंदा भरकर

श्रीहरि का अक्षरप्रसाद
हर महीने स्वीकार कीजिए

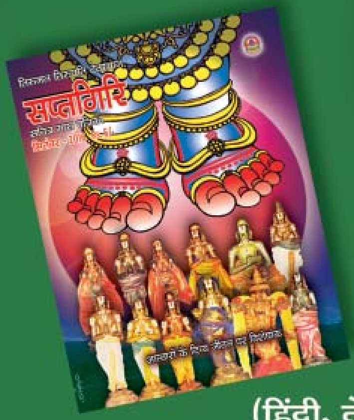

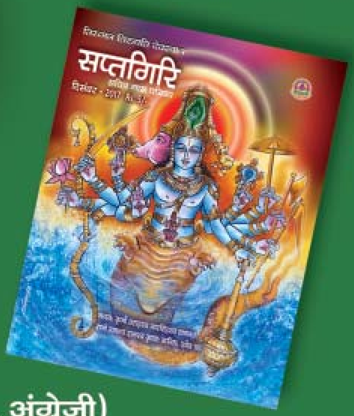

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

(हिंदी, तेलुगु, कन्नडा, तमिल, संस्कृत, अंग्रेजी)

चंदा भरने के लिए

वार्षिक चंदा - रु.६०/-
आजीवन चंदा - रु.५००/-
विदेशों में भेजने के लिए
वार्षिक चंदा - रु.८५०/-

संस्कृत सप्तगिरि की मासिक पत्रिका
के लिए आजीवन चंदा भरने की सुविधा नहीं है।

विवरण के लिए
प्रधान संपादक

सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड,
के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०७.
दूरभाष : ०८७७-२२६४३६३,
२२६४५४३.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५३ जून-२०२२ अंक-०१

विषयसूची

वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	07
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	11
स्वच्छ तिरुमल की ओर और एक कदम	श्री अत्ति रंगराजन	12
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	14
तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का मंदिर	डॉ.एन.दिव्या	16
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	18
सती सुमती	डॉ.के.एम.भवानी	20
महर्षि वशिष्ठ	डॉ.जी.सुजाता	22
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
योग साधना प्रयोग और प्रयत्न	डॉ.गाजुला शेक षावली	32
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	35
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	37
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्न	41
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
जून महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
भिण्डी - सब्जी से ज्यादा	डॉ.सुमा जोषी	48
नीतिकथा - जीवन का रहस्य	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
क्विज	एन.प्रत्यूषा	51
चित्रकथा - नम्माल्वार	डॉ.एम.रजनी	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

मुखचित्र - श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - उभयदेवेरियों सहित श्री गोविंदराजस्वामी, तिरुपति।

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

फूलों के कैंकर्य का परिमल

तिरुमल-पहाड़ नित्य कल्याण व हरे तोरणों से सदा शोभायमान रहता है। हर नित्य स्वामीजी को सुबह सुप्रभात-सेवा से लेकर रात की एकांत-सेवा तक - नित्य, वार, पक्ष, मास, संवत्सर आदि सभी उत्सवों में तरह-तरह के फूलों को मालाओं में गूँथ कर अलंकृत किया जाता है। यह नित्य फूलों के कैंकर्य का परिमल विशेष रूप से श्रीस्वामीजी को आनंद प्रदान करता है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी पुष्पालंकार-प्रिय हैं। तिरुमल-क्षेत्र के स्वामी प्राकार में 'पुष्प-मंडप' में स्थित 'पूला अरा' इसी कैंकर्य का महती उदाहरण है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी को नित्य संपन्न होने वाले इस पुहुप-कैंकर्य को 'यामुनोत्तरै' नाम पर ही संपन्न किया जाता है। 'यामुनोत्तरै' से संबन्धित प्रसिद्ध भक्त ही अनंताल्वान जी हैं।

श्री बालाजी के पुष्प-कैंकर्य के लिए तिरुमल-क्षेत्र में नाना प्रकार की पुहुप-जातियों से संजोगित नंदन-वन, दिव्य-वन आदि अनेक पाले गए हैं। इन वनों के फूलों से ही कैंकर्य की मालाओं का गुँथन होता है। तिरुमल के स्वामी के ही अलावा अन्य देवता-मूर्तियों की भी मालाएँ इन वनों के फूलों से ही गुँथी जाती हैं। इसी प्रकार ति.ति.दे. के अनुषंगी मंदिरों की देवता-मूर्तियों के लिए भी ये सारे फूल समर्पित किये जाते हैं।

इस प्रकार के कैंकर्यों में अलंकृत इन फूल-मालाओं के निर्माल्य को तिरुमल की 'सोने की बावडी' में निमज्ञन किया जाता है। तिरुमल के सारे फूल श्रीस्वामीजी के सेवा-कैंकर्य के लिए ही हैं, अन्यों के उपयोग के लिए निषेध हैं। स्वामी को अलंकृत फूल भक्तों को नहीं दिये जाते हैं। यही यहाँ का संप्रदाय है।

इन अमूल्य पुहुपों के निर्माल्य को व्यर्थ जाने न देने के सदुद्देश्य से हाल ही में ति.ति.दे. के द्वारा एक बृहद परियोजना बनायी गयी है। इस परियोजना के अंतर्गत ड्राई-फ्लावर तकनीकी के द्वारा 'अगर बत्तियों' के बनाने के साथ-साथ 'फोटोफ्रेम', 'की-चेइन', 'पेपर-वेइट', 'डॉलर', 'कलमें' तथा 'कलम-स्टैण्ड' - जैसे उत्पादन तैयार किए जा रहे हैं। इन सारे उत्पादनों को भी ति.ति.दे. के मुख्य केंद्रों में बिक्री के लिए रखा गया है।

कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर को समर्पित पुहुपों के निर्माल्य से बनायी हुई इन वस्तुओं को अगर हम अपने घरों में रखने से स्वामी अपने घर में ही विराजमान हो कर, अपने ही संग रहने की अनुभूति प्राप्त होती है। प्रशांत वातावरण, अच्छी मनःशांति, मानसिक व शारीरक स्वास्थ्य के लिए भी ये उत्पादन अत्यंत प्रयोजकारी हैं। अतएव ति.ति.दे. 'सप्तगिरि' का यह मुख्य आशय है कि समस्त-भक्तजन इस सुअवसर से प्रयोजन प्राप्त करें और श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी की अविरल-कृपा के पात्र बनें!!!

ॐ नमो वेंकटेशाय।

(गतांक से)

वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

कार्यसाधक को अपनी शक्ति के परिचय के साथ-साथ किसी भी स्थिति में कार्य को संपन्न करने का असीम आत्म-विश्वास होना चाहिए। श्रेष्ठ कार्यसाधक सभी स्थिति-संदर्भों में काम को पूरा करने का आत्म-विश्वास रखता है। हनुमान के चरित्र में ऐसे श्रेष्ठ गुणों का दर्शन होते हैं। सीता की खोज करने की आज्ञा पाकर हनुमान जांबवान, अंगदादि वानरों के साथ दक्षिण दिशा में यात्रा करके सागर के तट पर पहुँच गए हैं। सुग्रीव के वचनों के अनुसार सीता सागर पार लंका में होगी। लेकिन अपार सागर को कौन लांघ कर जाएगा। तब हनुमान के द्वारा वाल्मीकि ने उन के आत्म-विश्वास का प्रदर्शन करवाया है। हनुमान सभी वानरों से बडे स्वर में कहते हैं--

यधा राघवनिर्मुक्तः शरःश्वसन विक्रमः,

गच्चेत्तद्वद्गमिष्यमि लंकाम रावण पालिताम।

यानी राम बाण की तरह शर गति से लंका जाकर सीता की खोज करूँगा। अगर वहाँ सीता का पता नहीं चलेगा तो सीधा स्वर्ग जाकर खोज करूँगा। वहाँ भी अगर सीता दिखाई नहीं पडेगी तो फिर लंका लौटकर रावण को बंदी बनाकर लाऊँगा। एक रावण क्या समस्त लंका को ही उखाड कर ले आऊँगा। किसी भी रूप में सीता का पता लगाऊँगा। अपने कार्य को अवश्य पूरा करूँगा।

कार्य को किसी भी रूप में पूरा करने का यही श्रेष्ठ कार्य साधक का गुण है। इस रूप में पूरे आत्म-विश्वास के साथ एकाग्रचित्त होकर सीतान्वेषण करनेवाले हनुमान श्रेष्ठ कार्य साधक हैं।

कार्य साधक को बुद्धिकुशल और समयानुसार कार्य-व्यूह को बदलने की आवश्यकता होती है। अपने कार्य की पूर्ति के लिए कई बार साधक को अपने व्यूह को बदलने की आवश्यकता भी होती है। ये दोनों गुण हनुमान में देख सकते हैं। हनुमान शतयोजन सागर को लांघ करके सुंदर लंकापुरी पहुँच गए। लंकापुरी के सौंदर्य को देखकर चकित हो गए। अपने कार्य सीता की खोज करने के लिए इस संदर्भ में हनुमान को नए व्यूह की आवश्यकता हुई। सीता की खोज वे दिन में नहीं कर सकते और अपने निज रूप में भी नहीं कर सकते हैं। राक्षस रूप धारण करने से राक्षसों के द्वारा पकडे जाने का भय है। उस के पकडे जाने से संपूर्ण व्यूह असफल हो जाएगा। राक्षसों की निगाह से अपने को बचाकर हनुमान को लंका में सीता की खोज करनी पडी। यहीं हनुमान की अग्नि परीक्षा हुई। शत्रु दुर्भेद्य रावण के महल में सीता की खोज करना अति साहस कार्य है। तब अपनी बुद्धिकुशलता तथा समयानुसार अपने को ढालने के गुण से अत्यंत सूक्ष्म रूप धारण करके रात के समय लंका में प्रवेश कर के रावण के महल में बिल्ली की तरह छप्पा-छप्पा सीतान्वेषण करते हैं। तभी अशोक वन में सीता का पता लगा पाते हैं। यह हनुमान की बुद्धिकौशलता और कालानुसार अपने को बदलने के गुण का परिचायक है। हनुमान अपनी शक्ति के बल पर राम-कार्य को असफल हुए बिना संपन्न करते हैं। सीतान्वेषण में सफल होते हैं।

हनुमान अतुलित बलशाली है। साहसी है। अजेय हैं। जितने धीशाली हैं उतने ही बुद्धिमान भी हैं। आवश्यकता पडने पर अपनी बुद्धि का उपयोग करके अपने कार्य को संपन्न करने में हनुमान के लिए हनुमान ही प्रमाण है। बल और बुद्धि का समान रूप से उपयोग करके अपने कार्य को संपन्न करने में हनुमान अपना कोई सानी नहीं रखते हैं। अपनी इस निपुणता का परिचय उन्होंने अपनी लंका यात्रा के दौरान दिया है। सीता की खोज करने के बाद राम के पास लौटने के पहले हनुमान की बुद्धिकुशलता ने उन्हें रावण की शक्ति और सीमाओं को जानने को प्रेरित किया। परिणामतः हनुमान अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके अशोक वन को नष्ट किया। जंबुमाली, अक्षय कुमार आदि राक्षसों का संहार किया। इंद्रजित के हाथों में ब्रह्मास्त्र के प्रयोग होने पर अपनी बुद्धि का उपयोग करके बंदी होने का नाटक किया। रावण दरबार में पहुँच कर रावण को ही उपदेश देने का प्रयत्न किया। हनुमान के नाम से तेलुगु में 'चूचि रम्मनिन काल्वि वच्चाडु' कहावत प्रचलित हो गयी। अर्थात् जितना कहा गया उससे भी अधिक काम करना। (सीता का पता लगाने भेजा गया तो हनुमान सीता का पता लगाने के साथ-साथ लंका में आग लगाकर आये) यह सेवा धर्म का आदर्श

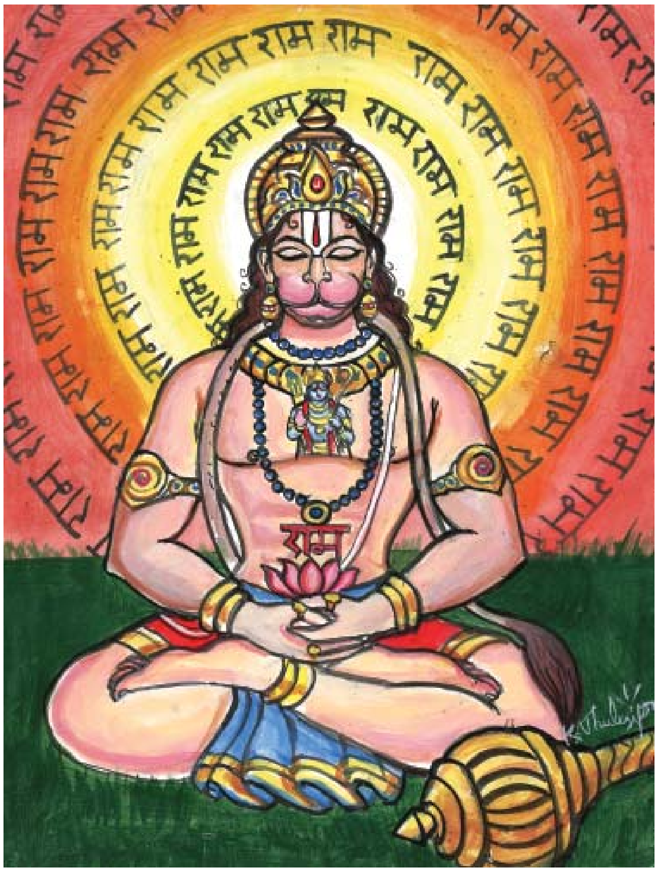

रूप होने के साथ-साथ कार्य साधकों का अप्रतिम आदर्श भी है।

हनुमान कार्य-साधक के चारों गुणों का आदर्शमूर्ति है। वाल्मीकि ने अपने रामायण में सिद्ध गंधर्वों के माध्यम से कार्य साधक के गुणों का उल्लेख किया है। सिंहिका के संहार के बाद विजयी हनुमान से सिद्ध गंधर्व उन की कार्य-साधना पर अभिभूत होकर हनुमान का अभिनंदन करते हुए कहते हैं--

यस्य त्वेतानि चत्वारि वानरेंद्र यथा तव,

धृतिर्धृष्टिर्मतिर्धाक्ष्यम स कर्मसु न सीदति।।

हे वानरोत्तम! श्रेष्ठ कार्यसाधक के लिए चार गुणों का होना अनिवार्य हैं। वे हैं धृति (यानी धैर्य), दृष्टि (यानी सूक्ष्म दृष्टि या सूझ बूझ) मति (यानी बुद्धिमत्ता) दाक्ष्यम (यानी निपुणता)। इन चारों का तुमने उत्तम प्रदर्शन किया। ऐसे गुण जिन में होते हैं वे हमेशा अपने कार्यों में सफल होते हैं। सिंहिका के संहार में हनुमान ने इन गुणों का परिचय दिया है।

निर्वेद या दुःख कार्य साधक को निरुत्साह और पराजय में डालता है। इसलिए उत्तम कार्य साधक को कभी भी निर्वेद में नहीं पडना चाहिए।

अपने कार्य में तात्कालिक असफल होने पर भी कार्य साधक को अपने मार्ग पर ही आगे बढना चाहिए।

लंका में पहुँचने के बाद हनुमान सीता की खोज करते हैं। बहुत खोज करने के बाद भी सीता का पता नहीं लगता है। तब हनुमान निरुत्साह एवं निर्वेद का शिकार होते हैं। लेकिन हनुमान अपनी हार को स्वीकार करनेवाले कमजोर कार्य साधक वीर नहीं है। अपने आंतरिक शक्ति से हनुमान स्वयं निर्वेद से बाहर निकलते हैं। वाल्मीकि ने हनुमान के द्वारा ही उत्तम कार्यसाधक के लिए निर्वेद को जीतने की बात कहलवायी है--

अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परम सुखम,

अनिर्वेदो हि सततम सर्वार्थेषु प्रवर्तकः।

यानी निर्वेद का मतलब चिंता। चिंता में न पडना ही प्रगति का मूल मंत्र है। अनिर्वेद ही परम सुख है। अनिर्वेद ही मनुष्य को सभी कार्यों में आगे बढने की प्रेरणा देता है। मनुष्य की सारी सफलताओं के पीछे भी अनिर्वेद ही रहता है।

मैं अपने मन से निर्वेद को दूर करके फिर से एक बार सीता की खोज करूँगा। इस रूप में स्वयं हनुमान आत्म-विश्वास एवं आत्म प्रबोध से अपने निर्वेद को दूर करके फिर पूरे उत्साह के साथ सीता की खोज में लगते हैं। वाल्मीकि ही नहीं सभी रामायणकर्ताओं ने हनुमान में

निर्वेद को भी जीतने के दृढ संकल्प को दिखाकर श्रेष्ठ कार्य साधक के रूप में हनुमान को प्रतिष्ठित किया है।

३. स्वामी-आज्ञा पालन :-

स्वामी आज्ञा यानी हनुमान के लिए रामाज्ञा है। हनुमान के लिए रामाज्ञा सर्वधा शिरोधार्य है। रामायण आज्ञा पालन के संदर्भ में उच्च आदर्श का बखान करता है। स्वामी आज्ञा देता है तो सेवक को काम करना पडता है। किंतु किस अनुपात में। रामायण में इस का उच्चादर्श स्थापित किया गया है। स्वामी के बताये गए कार्य को उत्साह के साथ (आज्ञा से भी अधिक करनेवाला) करनेवाला सेवक श्रेष्ठ पुरुष है। जितना बताया गया उतना ही करनेवाला मध्यम पुरुष है। करने की शक्ति होने पर भी आज्ञा पालन न करके काम नहीं करनेवाला अधम पुरुष है। हनुमान में श्रेष्ठ पुरुष के गुणों का प्रतिपादन ही सभी रामायणकर्ताओं ने किया है। सुग्रीव और राम के द्वारा हनुमान सीता का पता लगाने भेजा गया है। हनुमान सीता का पता लगाते लंका पहुँच गए। लंका के अशोक वन में सीता को देखा। राम के द्वारा दी गयी अंगूटी को सीता को दिया। सीता का संदेश लेकर राम से मिलने लौटने लगे। तब कार्यसाधक उत्तम

पुरुष हनुमान को अपने कर्तव्य का बोध हो गया। राम और सुग्रीव के द्वारा बताये गए कार्य बहुत अच्छे ढंग से तो पूरा किया। किंतु रावण की ताकत का पता लगाकर सुग्रीव को इस का समाचार देने से सुग्रीव और प्रसन्न होंगे। यह उत्तम कार्य साधक का लक्षण है। अपने स्वामी को अतिरिक्त सेवा करने का भाव श्रेष्ठ सेवक में ही होता है। वाल्मीकि ने श्रेष्ठ कार्यसाधक के इस गुण का हनुमान के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

कार्ये कर्मणि निर्धिष्टे यो बहुन्यपि साधयेत,

पूर्वकार्यविरोधेन न कार्यम कर्तुमर्हति।।

एक काम करने प्रभु की आज्ञा हुई। वह कार्य संपन्न हो गया। उस का व्यतिरेक नहीं करनेवाले कुछ और कार्य करना ही कार्यसाधक का श्रेष्ठ गुण है। यह सोचकर ही हनुमान रावण की ताकत का पता लगाने अशोक वन को नष्ट करते हैं। जंबुमाली, अक्षय कुमार आदि राक्षसों को मारकर इंद्रजित के हाथों में बंदी होने का नाटक करते हैं। रावण के दरबार में पहुँच कर रावण को ही राम की शरण में जाने का उपदेश देते हैं। ये सभी कार्य प्रभु की आज्ञा के बिना ही करते हैं। क्यों कि ये सभी कार्य की आज्ञा के विरोध में नहीं हैं।

बल्कि कार्य को पुष्ट करनेवाले उपकार्य है। इन सब के करने से स्वामी को प्रयोजन होगा। तद्वारा स्वामी और प्रसन्न होंगे। इस रूप में वाल्मीकि ने हनुमान में श्रेष्ठ आज्ञा पालन और कार्य साधक के गुणों को दिखाया है।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

चिन्तैयिनोडु करणंगळ् यावुम् शिदैन्दु, मुन्नाळ्
अन्दमु त्ताळ्न्ददु कण्डु, अवैयेन्तन कन्नरुळाल्
तन्द वरंगनुम् तन्शरण् तन्दिलन् तानदु तन्दु,
एन्दै यिरामानुजन् वन्देडुत्तनन् इन्नेन्नैये ॥६९॥

अचिदविशेषितत्वदशायां प्रलयसीमनि करणकलेबरयोगम् अन्येषामिव ममापि कृपया कृतवान् भगवान् श्रियःपतिः स्वचरणकमलं तु न प्रादर्शयत्; श्रीरामानुजस्तु स्वयमेव तत्प्रदर्शनपूर्वकं मामद्य समुद्धरतिस्म॥

सृष्टि से पहले (अर्थात् प्रलयकाल में) जब मन और दूसरी इंद्रियां (और शरीर) स्थूल रूप छोडकर उपसंहृत हुई थी और आत्मा अचेतन-सी रह गयी, तब (ऐसे अचेतनप्राय प्राणियों में एक) मुझको अपनी कृपा से फिर शरीर व इंद्रियों का रूप प्रदान करनेवाले श्रीरंगनाथ भगवान ने अपने पादारविंद नहीं दिखाये (माने पादारविंदों के दर्शन देकर मेरे उज्जीवित होने का मार्ग नहीं बताया)। हमारे नाथ श्री रामानुज स्वामीजी ने तो अपने आप ही उसे दिखाकर अब मेरा उद्धार किया।

(विवरण- शास्त्र पुकारते हैं कि भगवान सीमातीत कृपा से नित्य ही इन चेतनों का उद्धार करने में प्रयत्न-शील रहते हैं। और सृष्टि करना इसका मुख्य दृष्टांत है। अर्थात् प्रलयकाल में ये जीव अपने शरीर व इंद्रियां खोकर पंख-विरहित पक्षी की भांति लौकिक सुख भोगने अथवा मोक्ष कमाने में अशक्त होकर अचेतन जैसे पडे हुए थे। यह देख कर भगवान ने दुःखी होकर इन पर दया करते हुए इन्हें पूर्ववत् शरीर इंद्रिय आदि को प्रदान किया। उनकी यह आशा थी कि इन उपकरणों से वे चेतन-पूजा उपासना इत्यादि करके मोक्ष पायेंगे। परंतु उनकी यह इच्छा तब सफल होती यदि उन्होंने अपने चरणारविंदों के दर्शन भी दिये होते। परंतु उन्होंने यह न करते हुए अपनी कृपा करने में संकोच कर दिया। फलतः कोई भी अपने शरीर का सदुपयोग कर मोक्ष पा नहीं सका। इस अवस्था में श्री रामानुज स्वामीजी ने भगवान से छिपाये हुए उन पादारविंदों को स्वयं दिखा कर सब का उद्धार किया। अतः उनकी कृपा भगवान की कृपा से भी बढकर श्रेष्ठ है।)

श्री रामानुज स्वामीजी की कृपा भगवान की कृपा से भी बढ़कर श्रेष्ठ है।

क्रमशः

स्वच्छ तिरुमल की ओर और एक कदम

- श्री अत्ति रंगराजन
मोबाइल - 9849099246

क्या शेषाचल को प्लास्टिक के द्वारा बढ़ता प्रदूषण चुनौती दे रहा है?

शेषाचल एक शांत, सुरम्य और पुण्यमय क्षेत्र है जो पुरातन काल से ही स्वच्छता का प्रतीक रहा है। इस पर्वत पर पाए जाने वाले वनस्पति एवं पशुवर्ग बड़े ही दुर्लभ हैं। इसकी हरियाली सबको आकर्षित करती है। यह पर्वत बहुत सारे जीव राशियों का स्थानिक है। इस कारण से इस पर्वत को भारत सरकार के द्वारा ''बायोस्फियर रिज़र्व'' घोषित किया गया।

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की प्रसिद्धि दुनिया के हर कोने पर फ़ैल गयी है। कई सालों से भगवान के दर्शन के लिए भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसका प्रभाव इस शेषाचल पर्वत पर पड़ रहा है। प्रतिदिन अनगिनत संख्या में बढ़ते भक्तजनों के कारण इस क्षेत्र की पवित्रता को स्थिर रखना एक चुनौती-सा बन गया है। भक्तजनों के अकर्मक क्रिया इस क्षेत्र को प्रदूषित करने का एक मुख्य कारण है। इस बढ़ते प्रदूषण समस्या को नियंत्रित करने के लिए एवं स्वच्छता और शुद्धता को स्थिर रखने के प्रयास में तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने कई प्रकार के कदम उठाए।

शेषाचल का ही नहीं परंतु पूरी दुनिया के प्रदूषण का मूल कारण 'प्लास्टिक' है। डिस्पोजेबल प्लास्टिक वस्तुओं का एक गुण कि उसका उपयोग एक बार ही कर सकते हैं। बहुत कम प्लास्टिक वस्तुओं पुनःउपयोगी है। प्लास्टिक कवर, कप, ग्लास और स्ट्रा आदि वस्तुओं का उपयोग निरंतर हो रहा है, परंतु पुनःउपयोग एक प्रश्नचिह्न है। भक्तजनों को प्रसाद देने के लिए देवस्थान ने स्वयं प्लास्टिक का उपयोग किया। इस प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए इस विषय पर बड़ा ही ध्यानपूर्वक जांच किया और एक धैर्य निर्णय लिया। अपितु हर एक प्लास्टिक वस्तुओं पर 'प्रवृत्त' का चिह्न रहता है, जिसका अर्थ है कि इन वस्तुओं को उपयोग करने के बाद इन्हें कचड़े के डिब्बे में फ़ेंक दे। इस प्रकार करने से कई वस्तुओं का पुनःउपयोग किया जा सकता है। परंतु दुर्भाग्यवश इनका विसर्जन समुद्र और भूमि पर किया जा रहा है। जिसके कारणवश इसका दुष्प्रभाव जंतुओं और पक्षियों पर पड़ रहा है।

इन सब पर दृष्टि रखते हुए देवस्थान अधिकारियों ने प्लास्टिक थैली एवं वस्तुओं पर पाबंधी लगा दी। प्लास्टिक थैली के स्थान पर जूट थैले एवं कपडे से बने थैले का उपयोग जारी है। यह कपडे के थैले दो साइजों में उपलब्ध हैं। इन थैलियों को पुनःउपयोग कर सकते हैं। नवनीत पत्र को कपडे के थैली के अंदर के भाग में रख कर थैले दिया जाता है, जिसके कारण प्रसाद में उपयोग किये जानेवाले घी को नवनीत पत्र सोक लेता है। इसके अलावा सब्जियों के छिलके और चीज़ें थैले बनाने में काम आती हैं।

प्रतिदिन 40,000 प्लास्टिक बोतलें पायी जाती थी, परंतु अभी एक भी मिलना कठिन है। पहले अधिकतर भक्त-जन पानी के लिए प्लास्टिक बोतल का प्रयोग करते थे। यहाँ तक की दुकानों में भी पानी की बोतले उपलब्ध थीं। देवस्थान ने सख्त कदम उठाया और प्लास्टिक बोतलों पर पाबंधी लगा दी। अब प्रश्न यह उठा की यात्री पानी का और भोजन का सेवन कैसे करेंगे? इसका उत्तर भी देवस्थान के पास है। हर स्थान पर निर्मल पीने का पानी 'जल प्रसाद' के रूप में उपलब्ध है। भक्त दुकानों से सावधानी जमा (Caution deposit) करके शीशे की बोतल खरीद सकते हैं। जितने दिन चाहे उसका उपयोग कर सकते है। दर्शन के बाद इन शीशे की बोतलों को लौटाकर जमा किया हुआ धन वापस प्राप्त कर सकते हैं। तिरुमल में काफी स्थानों पर 'अन्न प्रसाद' भी उपलब्ध है, जो निःशुल्क है। इस कारणवश भक्तों को अपने घर से या होटल से खाना लाने की आवश्यकता नहीं है। इस की वजह से यात्री उनके द्वारा बचा हुआ खाना नहीं फ़ेंक सकते है। यहाँ तक यह एक चेतावनी है कि भिखरे खाने को खाने के लिए कई जानवर आ सकते हैं जो मनुष्य के भय का कारण बन सकते हैं।

यह नियम सिर्फ यात्रियों और भक्तों के लिए ही नहीं है, यह नियम आदरणीय अतिथियों (V.I.P) के लिए भी है। यहाँ तक कि देवस्थान के द्वारा आयोजित मीटिंग पर भी शीशे का ग्लास, बोतल का उपयोग होता है। देवस्थान अधिकारी यही कहते हैं कि सबको इन नियमों का सख्त पालन करना चाहिए। इस तरह की पाबंधी एवं निर्णय का सबने स्वागत किया। सब्जियों के छिलके, रसोई घर के कचड़े, अप्रयुक्त खाना आदि तिरुमल में अभी बड़ी सावधानी से प्रवृत्त किया जा रहा है।

तिरुमल घाट की सड़कों को निरंतर स्वच्छ रखना भी देवस्थान की जिम्मेदारी है। पहले इसकी सफाई के लिए मनुष्यों की सहायता लिया जाता था, परंतु शीघ्र आधुनिक मशीनों का संपूर्ण उपयोग होगा। इसके अलावा विद्युत केलिए नवीकरणीय संसाधन जैसे सूर्य एवं वायु अधिकतर उपयोग में लाया जा रहा है।

इस क्षेत्र को स्वच्छ एवं पवित्र रखने की जिम्मेदारी न केवल देवस्थान की है, परंतु सभी भक्तजनों एवं यात्रियों की है, जो न केवल भगवान के दर्शन केलिए आते है, साथ में देवस्थान द्वारा दिए गए सभी सुविधाएँ प्राप्त कर रहे हैं।

सभी से प्रार्थना है- 'इस क्षेत्र को निर्मल रखने आप सभी का सहयोग अत्यावश्यक है। भगवान हमारा है, भगवान का क्षेत्र हमारा है। इस पवित्र क्षेत्र शेषाचल पर्वत को स्वच्छ रखना भी भगवान की सेवा है।'

ॐ नमो वेंकटेशाय।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

119

श्रीमते रामानुजाय नमः

इस श्लोक का वही भाव है कि जो पहले कह चुके हैं। और भी बृहद्ब्रह्म संहिता में एकान्ती शरणागत मुमुक्षुओं का स्वभाव वर्णन आया है कि :-

नानिवेदित मश्नन्ति न नश्यन्ति बृथाक्षणम्।
मनसा बचसा विष्णो र्नाम मन्त्रैक जल्पकाः।।

श्री भगवान के शरणागत लोग श्री भगवान को अर्पण किये बिना कुछ भी नहीं खाते हैं। अनुभव कैंकर्य के बिना एक क्षण भी वृथा नहीं बिताते हैं। मन से भगवान के स्मरण के सिवा कुछ भी चिन्तन नहीं करते। जिह्वा से भगवान के श्रीराम श्री मन्त्र के सिवा और कुछ नहीं उच्चारण करते।

न च मन्त्रान्तरं येषां न व्रतान्तर सेवनम्।
न फलान्तर जिज्ञासा न देवान्तर दर्शनम्।।

परमैकान्ती शरणागति मुमुक्षु महात्मा लोग अपने इष्टदेव श्री भगवान के मन्त्रों के सिवा दूसरे देवों के मन्त्रों को न तो उच्चारण करते हैं न जपते हैं। श्री भगवान के व्रतों को छोड़कर दूसरे देवों का व्रत भी नहीं करते हैं। भगवान की सेवा के सिवा भगवान से और कुछ भी नहीं याचना करते हैं। अपने इष्टदेव श्री भगवान के दर्शनों के सिवा देवतान्तरों का दर्शन भी नहीं करते हैं।

नान्य शेषस्य ग्रहणं फलादेरपि भूमिप।
नान्य वेषानुकरणं नान्यपर्वानुमोदनम्।।

इसका यह भाव है कि श्रीपति के शरणागत अपने इष्टदेव श्री भगवान के प्रसाद के सिवा दूसरे देवों का अर्पण किया हुआ अन्न, वस्त्र, फल, फूल, माला, चन्दन वगैरह कुछ भी नहीं ग्रहण करते हैं। शरणागतों के लिए शास्त्रों में जो वेष धारण करने को कहा है जैसे कि ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक, तुलसी तथा कमलाक्ष की माला, शंख-चक्रादि। इसके सिवा न दूसरा तिलक, न दूसरी चीज की माला, न दूसरे देवों का चिह्न शरणागत लोग धारण नहीं करते हैं याने वैष्णव वेष के सिवा स्वप्न में भी दूसरा वेष नहीं धारण करते हैं। शरणागत वैष्णवों को क्या धारण करना चाहिए यह आगे के श्लोक में लिखा है।

ये कण्ठ लग्न तुलसी नलिनाक्ष माला,
ये बाहुभूल परिचिह्नित शंख चक्रे।
येवा ललाट पटले लसदूर्ध्वपुण्ड्र,
स्ते वैष्णवाः भुवन माशु पवित्रयन्ति।।

कण्ठ में तुलसी और कमलाक्ष की माला, बाहु मूल में शंख-चक्र का चिह्न, ललाट में ऊर्ध्वपुंड्र तिलक जो धारण करके रहते हैं उन वैष्णवों का जहाँ चरण स्पर्श होता है वहाँ की पृथ्वी पवित्र हो जाती है। इस श्लोक का संक्षेप में यही भाव हुआ। और शरणागत मुमुक्षु लोग अपने इष्टदेव के पर्व के सिवा अन्य देवों का उत्सव भी नहीं करते।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोनारी तथेतरः।
चक्राद्यै रङ्कन्येद्गात्रमात्मीयस्यां खिलस्य चा।
नारी वा पुरुषो वापि प्रपद्य शरणं हरिम्।

संसार बन्धनान्मुक्तिं लभते चेह जन्मनि।।

यः शरण्य मशेषाणां प्राप्नोति शरणं हरिम्।

समुक्तः सर्वपापेभ्य स्वकुलं च समुद्धरेत्।।

"ब्राह्मण हो या क्षत्रिय हो, वैश्य हो या शूद्र हो, स्त्री हो या और कोई हो सबों को अपने कल्याण के लिए अपने बाहूँ मूल में श्री शंख-चक्र का चिह्न अवश्य धारण करना चाहिए।" "स्त्री हो या पुरुष हो यदि भगवान का शरणागत हो जावे तो इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूटकर वह अवश्य परमधाम को चला जाता है।"

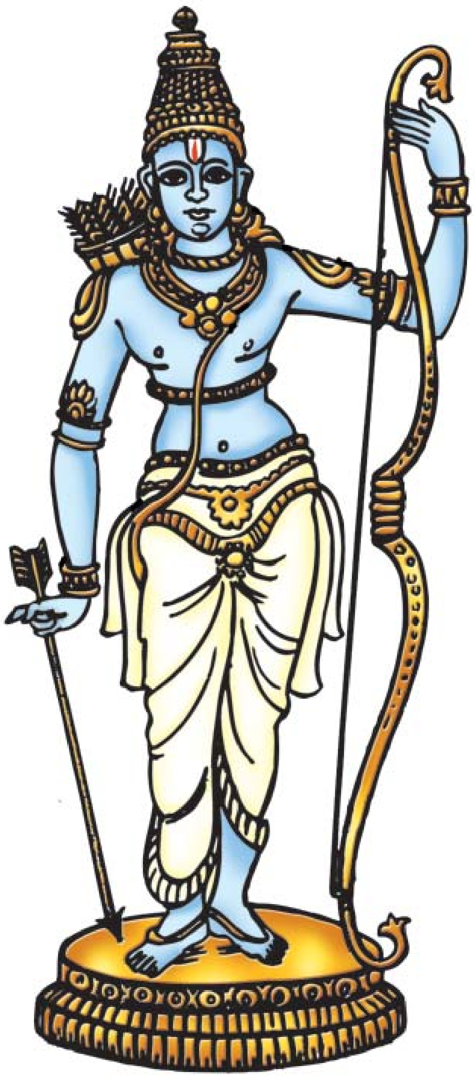

"देवतान्तर उपायान्तर प्रयोजनान्तर त्यागपूर्वक सदाचार्य के द्वारा जो भगवान श्रीपति के शरणागत हो जाता है वह सब पापों से छूट जाता है उसके कुल का भी उद्धार हो जाता है।"

इससे संसार बन्धन से छूटने की इच्छा करने वाले चेतनों को चाहिए कि अवश्य श्री भगवान के शरणागत होकर रहें।

यः प्रपन्नोऽपि लक्ष्मीशं न चक्रादिभि रङ्कितः।

न बहत्युर्ध्वपुण्ड्रं वा नैकान्त्यन्तस्य विद्यते।।

भले ही भगवान लक्ष्मीकान्त के शरणागत क्यों न हो, या अपने को शरणागत क्यों न मानता हो परन्तु यदि चक्रादि आयुधों से अंकित न हो और ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण न करता हो तो उसको एकान्ती वैष्णव नहीं कह सकते याने एकान्ती भागवतों के लिए शास्त्रों में जो फल बताया है सो उसे नहीं प्राप्त हो सकता है।

नान्योत्सवावलोकं च नान्ययात्रा प्रवर्त्तनम्।

नान्य ब्रतानुचरणं नान्य शक्ति र्मगागपि।।

श्री भगवान अनन्य शरणागत मुमुक्षु लोग अपने इष्टदेव श्री भगवान के उत्सवों के सिवा दूसरे देवों के उत्सवों को भी देखने नहीं जाते। अपने इष्टदेव श्री भगवान के तीर्थों के सिवा दूसरे देवों के तीर्थों में भी नहीं जाते।

स्वाधिकार विरुद्धं च व्याखानं नाटकं तथा।

निबन्धनं श्रवणं दृश्यं बर्जयेत् सत्त्वसंश्रयः।।

शरणागत मुमुक्षुओं को स्वरूप से विरुद्ध लेक्चर व्याख्यान नहीं सुनना चाहिए। नाटक तमाशा वगैरह देखने भी नहीं जाना चाहिए। अपने अधिकार से विरुद्ध ग्रन्थों को नहीं सुनना-पढ़ना चाहिए और भी स्वरूप नाशक अनेक प्रकार के चमत्कारिक चीजों को याने जादू, सिनेमा वगैरह को देखने के लिए नहीं जाना चाहिए। क्योंकि इन सब के संसर्ग से हृदय में मालिन्य आने का भय रहता है।

यज्ञो दानं जपो होमः स्वाध्यायः पितृकर्म च।

वृथा भवति विप्रेन्द्रा ऊर्ध्वपुण्ड्रं बिना कृतम्।।

क्रमशः

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का मंदिर

- डॉ.एन.दिव्या

संसार-भर में तिरुपति पुण्यक्षेत्र आध्यात्मिकता के लिए महोन्नत है। यात्रियों के तिरुपति के इर्द-गिर्द आते ही, पहले गोविंदराजस्वामी के मंदिर का गोपुर अगवानी देता हुआ दिखाई देता है। यही एक मंदिर है, जो ऊँचे राज-गोपुर के साथ तिरुपति में दर्शन देता है। इसी मंदिर के कारण तिरुपति को प्राचीन काल से, इसी स्वामी के नाम पर, 'गोविंदराज पट्टण' भी कहा जाता था। 12वीं शताब्दी में प्रसिद्ध श्रीवैष्णवाचार्य भगवद्रामानुजाचार्यजी ने श्री गोविंदराजस्वामी का प्रतिष्ठापन किया था।

श्री गोविंदराजस्वामी का मंदिर तिरुपति के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह मंदिर तिरुपति के रैल्वेस्टेशन के समीप है। इस मंदिर में श्री गोविंदराज स्वामी जी विराजमान हुए हैं। इन्हें वेंकटेश्वर स्वामीजी के बडे भाई के रूप में माना जाता है। अपने भाई बालाजी के विवाह के लिए कुबेर ने कर्ज के रूप में पैसे दिये थे। उन पैसों को सेर से माप-माप कर, थक कर शिर के नीचे नाप (सेर) रखकर सो गये। मंदिर में श्री गोविंदराजस्वामी की मूर्ति इसी मुद्रा में दिखाई पडती है। यह मंदिर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधीन में है।

मंदिर का निर्माण :

श्री गोविन्दराज स्वामी मंदिर के दो गोपुर है। बाहर का गोपुर बहुत बडा है। भीतर का गोपुर बहुत ही पुरा प्राचीन है। रामायण और भागवत की कहानियों से संबंधित शिल्पों से गोपुर बहुत ही सुंदर है। श्री गोविन्दराज स्वामीजी की मूर्ति आदिशेष के ऊपर सोये हुए जैसे लगती है। उत्तर दिशा की ओर भगवान के पैर, दक्षिण दिशा में शिर रखकर शंख और चक्र धारण कर, चतुर्भुजाओं से, नाभि कमल में ब्रह्म आसीन होकर शिर पर मुकुट धारण कर अनेक दिव्याभरणों से शोभित दिखाई देते हैं। मूल विराट गोविन्दराज स्वामी के साथ आण्डाल, श्रीकृष्ण, श्री रामानुज, तिरुमंगै आल्वार, श्री वेदांत देशिक, श्री लक्ष्मी, श्री मनवाल महामुनि सन्निधि आदि की मूर्तियाँ मंदिर में हैं। उत्तर दिशा के मंदिर में विष्णु मूर्ति के रूप में सोये हुए गोविन्दराज स्वामी विराजमान हुए हैं। दक्षिण दिशा में रुक्मिणी-सत्यभामा सहित श्री पार्थसारथी स्वामीजी का मंदिर है वैशाख मास में श्री गोविन्दराज स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव धूम-धाम से मनाते

हैं। मंदिर के सामने बडी पुष्करिणी है। मंदिर के पास में 'आलय वास्तु म्यूजियम' हैं। तिरुमल में बालाजी भगवान के मंदिर जैसा यहाँ भी वैखानस आगम पद्धतियों में पूजा कैंकर्य करते हैं। प्राचीन शिला शासन के अनुसार तीसरे राजराज चोलुडु ने इस प्रांत का शासन 1235 में किया। 1506 में विजयनगर राजाओं के सालव वंश काल में मंदिर की उन्नति हुई थी।

क्रिमिकंठुडु नामक शैव राजा ने रामानुज के समय में चिदंबर क्षेत्र में शेषशयन विष्णु मूर्ति के मंदिर पर आक्रमण कर मूर्ति को सागर में गिरा दिया। मंदिर के सभी वैष्णव पूजारियाँ प्राण भय से राज्य को छोड कर इधर उधर भाग गये। कुछ पूजारियाँ स्वामीजी के उत्सवमूर्तियों को लेकर तिरुमल प्रांत में रहनेवाले रामानुजाचार्य से मिले थे। इस विषय को जान कर, चिंतित होकर, चिदंबर में स्थित गोविंदराज स्वामीजी जैसी मूर्ति का प्रतिरूप बनाकर तिरुपति में प्रतिष्ठित किया। अपने शिष्य यादवराज की मदद से पुष्करिणी के पास मंदिर का निर्माण कराया। मंदिर के निर्माण के बाद मंदिर के चारों ओर एक अग्रहार का निर्माण कर, उसे अपने गुरु रामानुजाचार्य के नाम से 'रामानुजापुरम' नाम रखवाया। पुष्करिणी के चारों ओर सीढियों का निर्माण किया गया। बाद में यह पुष्करिणी अनेक आंदोलना का प्रचार स्थल भी बनी। वैष्णवों के आंदोलन केलिए यह पुष्करिणी केन्द्र स्थल बनी है।

एक कथन के अनुसार चिदंबर में मौजूद गोविंदराज स्वामीजी की मूर्ति को लाकर इस मंदिर में 1130 में प्रतिष्ठित किया गया। इस मंदिर के भीतर ही आण्डाल की मूर्ति की स्थापना की गयी। श्री गोविन्दराज स्वामीजी की मूर्ति की स्थापना के पहले से वहाँ श्री पार्थसारधी स्वामीजी की मूर्ति थी। इसकी उत्तर दिशा में गोविंदराज स्वामीजी की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया गया। चिदंबर की उत्सवमूर्ति गोविंदराज स्वामी यहाँ मूलविराट बन गये। तब तक मूलविराट के रूप में रहनेवाले वरदराज स्वामी की मूर्ति उत्सवमूर्ति बन गयी।

यहाँ के उत्सव सभी दिलचस्प

कहते हैं कि तिरुमल श्रीनिवास को समर्पित कुछ नैवेद्य तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी के मंदिर में ले आते हैं। तब श्री गोविंदराजस्वामी, गोदादेवी दोनों अगवानी करते हैं। वैशाखी उत्सव समय में श्री गोविंदराजस्वामी, श्री कोदंडरामस्वामी के आलय में जाकर, वहाँ अभिषेक करके लौटते हैं। उसी समय में यानी 'वैशाखी' ब्रह्मोत्सव में, एक और 'आनि' ब्रह्मोत्सव में भी नौवें दिन आल्वारतीर्थ नामक कपिलतीर्थ में पहुँचकर, वहाँ के पानी को झकझोर कर आ जाते हैं। एक और शासन में आलय में 365 यज्ञोपवीत समर्पित होते हैं, रोजाना एक के उपयोग करने का निर्देशन दिया गया है। ऐसे ही, वह स्वामी अविलाला तोटोत्सव, पोन्नकाल्व महोत्सवम्, पारुवेट उत्सवों में भाग लेने, मज्ञिगकालुवा (नाला), रामचंद्र तीर्थकट्ट पर जाने, आलय के बाहर स्थित बडे कोनेरु (पोखर) में नौकाओं में विहरण करना, पूलंगि-सेवा बनवाने, अहोबिल मठ की यात्रा करने-जैसे अनगिनत सेवाओं में वर्ष भर भाग लेते हैं।

यहाँ कुछ कर्म निषिद्ध

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर के आगे तेरु (रथ) वीथी में संजीवरायु के नाम पर हनुमानजी का मंदिर है, उन्हें सीधा देखना मना है। इसी तरह, मट्टलगोपुर न लाँघना चाहिए। बुग्गा में (पानी स्रोत) पाँव न धोना चाहिए। जीयरों के मठों में परख कर न देखें। ये सभी विषय वेंकटाचल विहार-शतक में पाये जाते हैं।

ब्रह्मोत्सवों का विधान

तिरुपति में स्थित श्री गोविंदराज स्वामी की भी तिरुमल वेंकटनाथ के ब्रह्मोत्सवों जैसी सारी वाहन सेवाएँ होती हैं। छोटे भाई जैसे ही बड़े भाई के भी उतने ही वैभवपूर्ण ढंग से उत्सव मनाये जाते हैं। वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार ब्रह्मोत्सव नवाह्निक को संपन्न होते हैं। इन उत्सवों में वाहन सेवाओं के साथ अंगरंग वैभव ढंग से, कितने ही राजस के साथ पुरवीथियों में शोभा-यात्रा के साथ भक्तों को दर्शन देते हैं- श्री गोविंदराजस्वामी। इन सारी वाहन सेवाओं में हम सब को भाग लेकर स्वामी के आशिष प्राप्त कर लेना चाहिए।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - 9482365339

7) तिरुक्कण्डियूर (कण्डियूर, त्रिमूर्ति क्षेत्र)

तंजाऊर (चेन्नै-तिरुच्चि मेन लाइन में एक बड़ा जंग्शन) (तिरुच्चि से लग भग 50 कि.मी.) से लगभग 10 कि.मी. दूरी पर है। स्थानीय बस आदि की सुविधा है।

मूलमूर्ति - हर-शाप विमोचन के पेरुमाळ - पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार - (माता जी) कमलवल्ली।

तीर्थ - कपाल मोक्ष पुष्करिणी, पद्मतीर्थ, कपाल तीर्थ, कुडमुरुट्टि नदी।

विमान - कमलाकृति विमान।

प्रत्यक्ष - अगस्त्य मुनि।

विशेष - तिरुक्करम्बनूर (दिव्य क्षेत्र) में जो ऐतीह है उसके बराबर है। परम शिव ने ब्रह्म के एक सिर को चुटकी में काट निकाल दिया था। उनका कपाल परम शिव के हाथ में चिपक गया। इसे पेरुमाल ने शाप का विमोचन कराया। इसलिए भगवान का नाम हर-शाप विमोचन पेरुमाल प्रचलित हुआ।

मंदिर से थोडी दूरी पर ब्रह्म, विष्णु एवं शिव के अलग-अलग मंदिर हैं। इसे त्रिमूर्ति क्षेत्र भी कहा जाता है। मंदिर में चक्रत्ताल्वार(सुदर्शन), आण्डाल, वेदान्त देशिक

की सन्निधियाँ भी विराजमान हैं। निकट में कल्याणपुर क्षेत्र में कल्याण वेंकटेश मंदिर है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

8) तिरुक्कूडलूर (आडुदुरैप्पेरुमाल कोइल, संघम क्षेत्र)

यह क्षेत्र कुंभकोणम दिव्यदेश (चेन्नै-तिरुच्चि मेइन लाइन में एक बडा स्टेशन)-तिरुच्ची से लग भग 88 कि.मी. दूरी पर है। (अय्यम्पेट्टी स्टेशन से 7 कि.मी. है।)

मूलमूर्ति - वैयङ्कात्त पेरुमाळ (जगत रक्षकन) उय्यवन्दार, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवमूर्ति - वैयङ्कात्त पेरुमाळ (जगत रक्षकन) उय्यवन्दार, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

(तायार) माताजी - पद्मासनी, पुष्पवल्ली।

तीर्थ - चक्रतीर्थ, कावेरी नदी।

विमान - शुद्‌ध सत्व विमान।

प्रत्यक्ष - नन्दक मुनि।

विशेष - यहाँ देवता लोग नन्दक मुनि के साथ भगवान के दर्शन करने आए। इसलिए संघम क्षेत्र का नाम पड़ा।

मंगलाशासन - एक आल्वार, दस दिव्य पद।

9) तिरुक्कवित्तलम् (कपिस्थलम, कृष्णारण्य क्षेत्र)

पापनाशम रेल स्टेशन से चेन्नै-तिरुच्चि मेइन लाइन में पापनाशम स्टेशन तिरुच्चि से 74 कि.मी. की दूरी पर है। कुंभकोणम से भी बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - गजेन्द्र वरदन-पूर्वाभिमुखी, भुजंग शयन।

उत्सव तायार (माता जी) - रमामणि वल्ली (पोट्रामरैयाळ)।

तीर्थ - गजेन्द्र पुष्करिणी, कपिलतीर्थ।

विमान - गगनाकृति विमान।

प्रत्यक्ष - हनुमान, गजेन्द्र।

विशेष - गजेन्द्र के ‘आदि मूल’ संबोधन कर भगवान ने अपनी रक्षा की प्रार्थना पर गजेन्द्र को अभय दिया और रक्षा की।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

सती सुमती

- डॉ. के. एम. भवानी,
मोबाइल - 9949380246.

भारतीय पौराणिक पतिव्रता स्त्रियों की कहानियों में सती सुमती की कहानी एक निराली कहानी है। आज के इस कलियुग में सुमती जैसी नारी के ऊपर भी विमर्शों का बौछार बरस रहा है। लेकिन सुमती की कहानी को अलग दृष्टिकोण से देखने से भगवान की लीला और करुणा समझ में आती है।

भारतीय नारी के लिए कोई असंभव काम नहीं है। वह चाहे तो सुमती जैसा भगवान को भी आदेश दे सकती है, सावित्री जैसे मृत्यु देवता से लड़कर अपने मरे हुए पति को जिंदा वापस पा सकती है, माता अनसूया जैसे त्रिमूर्तियों को शिशु बनाकर झूले में झुला सकती है। भारतीय पतिव्रता नारी हर असंभव काम को संभव बनाकर दिखा सकती है।

सृष्टि में चाहे जो भी बदलाव आए, सूर्य का चलन कभी नहीं रुकता है। ऐसे सूर्य के गमन को सती सुमती अपनी आज्ञा से स्थगित करती है। तो सारी सृष्टि स्तंभित हो जाती है। यह असंभव को संभव बनाई सुमती सदा अविस्मरणीय है।

सुमती प्रतिष्ठानपुर नामक नगर की निवासी है। कौशिक ब्राह्मण उसका पति है। दोनों खुशी से जिंदगी बिता रहे थे। कुछ समय के बाद नियति के अनुसार दुर्भाग्य से कौशिक कुष्ठु रोग से पीडित हो जाता है। दिन-ब-दिन उसका रोग बढ़ता ही जाता है। लेकिन सुमती बिना किसी घृणा और उबाव से हमेशा उसकी सेवा करती रहती है। मगर रोग पीड़ित कौशिक सदा सुमती को सताता रहता था।

एक दिन कौशिक की नज़र उस रास्ते पर जानेवाली एक वेश्या पर पड़ती है। कौशिक का मन किसी भी हालत में उससे सुख पाने की इच्छा से जल जाता है। धर्म विरुद्ध होने पर भी वह अपनी इस इच्छा को पत्नी से कहे बिना नहीं रह पाता है। पतिव्रता नारी का धर्म है पति को भगवान मानकर उसकी हर इच्छा की पूर्ति करना। पतिव्रता सुमती अपने धर्म को निभाना चाहती है, चाहे वह इच्छा धर्म विरुद्ध क्यों न हो। इससे उसे कोई मतलब नहीं है। उसके लिए पति भगवान से बढ़कर है।

पति की चाह को पूरा करने के लिए सुमती रात के समय में पति को एक छोटा पहिया गाडी में बिठाकर वेश्या के यहाँ ले जाने लगती है। वह रास्ता जंगल का रास्ता है। वहाँ मांडव्य नामक मुनि उस राज्य के महाराज से दी गई भयंकर सज़ा को भोगता रहता है। सुमती अपने पति कौशिक को उसी जंगली रास्ते से ले जाती रहती है। अंधेरे के कारण कौशिक के पैर वहाँ कठिन सज़ा को भुगतने वाले मांडव्य मुनि को लगते हैं। मुनि दर्द से कराह उठता है और उसने तुरंत यह शाप देता है कि जिसकी वजह से मुझे इतना दर्द झेलना पड़ा, वह कल सूर्योदय होते ही मर जाएगा। यह शाप सुनते ही कौशिक डर जाता है। लेकिन सुमती हिम्मत नहीं हारती है। वह मुनि से पूछती है कि उसके पति के कारण जो गलती हो गई, इसके लिए इतना बड़ा शाप देना क्या न्याय सम्मत है? वह गलती भी जान बूझकर की गई गलती नही है। तब मुनि भी उसकी बातों को मान लेता है। तो सुमती मुनि से शाप को उपसंहार करने को कहती है। तब मुनि कहता है कि वह यह नहीं कर सकता है। उसमें इतनी शक्ति नहीं है। लेकिन वह सुमति को यह सूचना देता

है कि किसी कारण वश उसके मुँह से यह नहीं निकला कि तुरंत तुम्हारी मृत्यु हो जाए। इसलिए सुमती के पास सूर्योदय तक का समय है। इतने में वह अपने सौभाग्य की रक्षा केलिए कोई उपाय कर सकती है।

मुनि की सांत्वना भरी बातों से सुमती सोच में पड़ जाती है। लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं दिखता है। मगर वह किसी भी हालत में पति की जान को बचाना ही चाहती है। इसलिए जब सूर्योदय होने का समय आता है, तब सुमती सूर्य भगवान से उदित न होने की प्रार्थना करती है। पतिव्रता के शासन के अनुसार सूर्य का गमन रुक जाता है तो सारी सृष्टि स्थगित हो जाती है।

सारे देवगण सुमती के पास आकर सूर्य का गमन जारी रहने देने की प्रार्थना करते हैं। लेकिन सुमती अपने पति के

प्राण बचाने के लिए और कोई रास्ता नहीं पाने के कारण हालात को जानकर, समझ कर भी मौन रहती है। तब सारे देवगण सुमती को मनाने की जिम्मेदारी सती अनसूया को सौंपते हैं। माता अनसूया आकर सुमती को समझाती है कि अपने स्वार्थ के लिए सारी सृष्टि को स्थगित करना धर्म सम्मत नहीं है। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वह एक पतिव्रता नारी को अन्याय होने देंगी। हरगिज़ नहीं। इसलिए माता अनसूया पर भरोसा रखकर पहले सूर्य गमन को आगे बढ़ने देना है। सती अनसूया माता की बातों को मानकर सुमती सूर्य भगवान से उसके गमन को आगे बढ़ाने की प्रार्थना करती है तो सूर्य चलने लगता है। सूर्य के गमन शुरू होते ही सुमती का पति कौशिक मर जाता है। तब माता अनसूया अपने तपोबल से कौशिक को जीवन दान देती है। वह अपने कुष्ठ रोग से भी मुक्त होकर स्वस्थ और सुंदर बन जाता है। सुमती बहुत खुश हो जाती है।

सुमती की कहानी हमें यह संदेश देती है कि अगर मानव हमेशा अपने धर्म पर आगे बढ़ता रहता है, तो उस के लिए असाध्य कुछ भी नहीं है। इस कहानी में सुमती पति को वेश्या गृह ले जाने की कोशिश करना उसका पतिव्रता धर्म है। पति की चाह, उससे होनेवाले परिणाम जो भी हो, उससे उसे कोई मतलब नहीं है। यह पतिव्रता धर्म के कारण ही भगवान प्रसन्न होकर सती अनसूया के माध्यम से उसे उसके पति को पुनर्जीवित करना ही नही, फिर से उसे स्वस्थ बनाकर सुमती का जीवन खुशियों से भर देता है। यह ईश्वर की अपार करुणा है।

ऋषि-मुनि

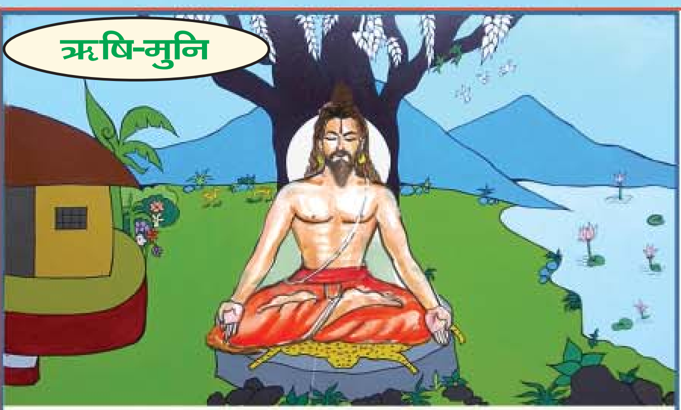

महर्षि वशिष्ठ

-डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

महर्षि वशिष्ठ ब्रह्माजी के मानस पुत्रों में से एक थे। सृष्टि रचना के उद्देश्य से ब्रह्माजी ने अपनी योगमाया से 14 मानसपुत्र उत्पन्न किए - मन से मरीचि, नेत्र से अत्रि, मुख से अंगिरस, कान से पुलस्त्य, नाभि से पुरलह, हाथ से कृतु, त्वचा से भृगु, प्राण से वशिष्ठ, अंगुष्ठ से दक्ष, छाया से कंदर्भ, गोद से नारद, इच्छा से सनक, सनन्दन, सनातन और सनतकुमार, शरीर से स्वायंभुव मनु और शतरूपा, वध्या से चित्रगुप्त। ब्रह्माजी के उक्त मानस पुत्रों में से प्रथम सात मानस पुत्र तो वैराग्य योग में लग गए तथा शेष सात मानस पुत्रों ने गृहस्थ जीवन स्वीकार किया। गृहस्थ जीवन के साथ-साथ वे यज्ञ, तपस्या तथा अध्ययन एवं शास्त्रास्त्र प्रशिक्षण का कार्य भी करने लगे। वशिष्ठ ने गृहस्थाश्रम का पालन करते हुए सृष्टि वर्धन, रक्षा, यज्ञ आदि से संसार को दिशा-निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त पुराणों में महर्षि वशिष्ठ मित्रावरुम के पुत्र और कहीं अग्निपुत्र के रूप में बताये गए हैं।

ब्रह्माजी द्वारा दिए गए कार्य

ब्रह्माजी ने वशिष्ठ ऋषि को दो काम दिए थे। एक सृष्टि संचालन जिसमें कि यज्ञ आदि करना और इंद्र, वरुण, अग्नि देव इन सब की तपस्या करके उन्हें प्रसन्न करना था और दूसरा था इक्ष्वाकु वंश का पुरोहित बनना। वशिष्ठ जी को यह पसंद नहीं आया। किंतु यह जानने पर आगे इसी वंश में महाविष्णु पैदा होंगे, उन्होंने रघुवंश का कुल पुरोहित बनना स्वीकार किया। वे अपने पिता ब्रह्म की आज्ञा से सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित बनकर कालांतर में भगवान राम के कर कमलों से पूजे गए थे।

ऋषि वशिष्ठ की पत्नी का नाम अरुंधती था। अरुंधती कर्दम प्रजापति और देवहूति की पुत्री थी। अरुंधती और ऋषि वशिष्ठ के सौ पुत्र थे। उन सौ पुत्रों में से शक्ति नामक पुत्र सबसे बड़ा था। ऋषि वशिष्ठ की भाँति ही अरुंधती भी विदुषी थी, तथा महर्षि वशिष्ठ के साथ उनका नाम भी आदर के साथ लिया जाता है। अतः आकाश में दिखने वाले सप्तर्षि तारामंडल में, वशिष्ठ तारे के निकट दिखाई देने वाले एक छोटे से तारे का नाम अरुंधती है।

अरुंधती के अलावा, दक्ष प्रजापति की पुत्री ऊर्जा भी ऋषि वशिष्ठ की पत्नी थी, जिसका उल्लेख भागवत में मिलता है। भागवत के ही अनुसार, ऊर्जा और ऋषि वशिष्ठ के सात पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः, चित्रकेतु, सुरोची, विरोजा, मित्र, उल्बण, वसुभृद्यान और द्युमान है। इसके अलावा एक अन्य पुराण, ब्रह्मांड पुराण के अनुसार, ऋषि वशिष्ठ की एक कन्या भी थी, जिसका नाम पुंडरिका था।

विश्वामित्र से प्रतिद्वंद्विता

वशिष्ठ इतने ज्ञानी है कि उन्होंने एक बार विश्वामित्र से टक्कर लेकर सत्संगति को तप से भी बडा सिद्ध किया। ऐसे ही एक और बार विश्वामित्र से स्पर्धा हुई। विशाल सेना के साथ आये विश्वामित्र को अपनी कामधेनु की सहायता से आतिथ्य देकर

विश्वामित्र को पराजित किया। तब उससे अभिभूत होकर विश्वामित्र ने कहा, ''हम आपके इस आतिथ्य सत्कार के लिये सदैव कृतज्ञ रहेंगे। एक राजा के रूप में तो मुझे आपके गुरुकुल तथा आश्रम को कोई अमूल्य भेंट देनी चाहिए, किन्तु युद्ध से लौटने के कारण यह संभव नहीं है। इसके विपरीत मैं जाने से पूर्व आपसे एक चीज मांगता हूँ। आशा है मेरी इच्छा की पूर्ति अवश्य करेंगे।'' इसके उत्तर में ऋषिवर ने कहा, ''आप मांगिये, यदि मैं इच्छित वस्तु देने में समर्थ हुआ तो आपको निराश नहीं करूंगा।''

विश्वामित्र ने कहा, ''ऋषिवर, मुझे आपकी कपिला नामक कामधेनु गाय चाहिए।'' वशिष्ठ का जवाब ''राजन, कामधेनु गाय देना मेरे लिये संभव नहीं है।'' हठी राजा विश्वामित्र ने जब कामधेनु गाय को बलात् ले जाने का प्रयास किया तो कपिला गाय के खुरों से असीम सैनिकों की उत्पत्ति हुई, जिससे विश्वामित्र को पराजित होकर खिन्न मन से अपने राज्य को लौटना पड़ा।

वशिष्ठ ऋषि को ब्रह्म बल प्राप्त था, इसलिए वे ब्रह्मश्री कहलाते थे तो विश्वामित्र ने भी अब कामधेनु गाय को पाने का विचार छोड़ दिया और ब्रह्मश्री बनने के लिए अपना राजपाट छोड़ कर वन में चले गए। उन्हें भी ऋषि वशिष्ठ की तरह ब्रह्मश्री कहलाना था। प्रतिस्पर्धाएँ होती रही। किंतु हर बार वशिष्ठ ही जीतते रहे। क्यों कि महर्षि वशिष्ठ शांत स्वभाव के तथा क्षमाशील प्रवृत्ति के ऋषि थे।

वैदिक काल का यह संघर्ष रामायण काल में मैत्री में परिवर्तित हो गया। रामकथा में विश्वामित्र यज्ञ-रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण को मांगने दशरथ के पास आये तो वशिष्ठ के ही कहने पर दशरथ ने अपने पुत्रों को उनके साथ भेजा था।

महर्षि वशिष्ठ की क्षमाशीलता

वशिष्ठ और विश्वामित्र के बीच का यह द्वन्द्व आगे भी चला। विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पूरे परिवार को नुकसान पहुँचाया। उन के पुत्रों को मरवाया। पुत्रवध को दुःख पहुँचाया। फिर भी क्षमावान वशिष्ठ ने विश्वामित्र को क्षमा की। पुत्र-पौत्र के बलिदान के बाद विष्णु भगवान ने उन्हें आश्वासन दिया- 'वत्स! तुम्हारे पौत्र के मुख से ये मधुर ऋचाए निकल रही है। तुम्हारा वंश डूबा नही है। शोक छोड़ो। तुम्हारा यह पौत्र सदा शिव का भक्त होगा और समस्त कुल को तार देगा।' इतना कहकर विष्णुजी अन्तर्धान हो गए। महर्षि वशिष्ठ ने इसी पौत्र का नाम पराशर रखा। यही पराशर ने भगवान शंकर की अर्चना कर शक्ति प्राप्त कर ली और जब पराशर विश्व-संहार की योजना बनाने लगे तब महर्षि वशिष्ठ ने समझाया- 'वत्स! तुम्हारा यह क्रोध अयुक्त नही हैं, किंतु विश्व के विनाश की योजना सही नहीं है। इसे छोड़ दे।' यह बात बालक की समझ में आ गई, किंतु राक्षसों से उसका क्रोध नही हटा।

वशिष्ठ ने पराशर को समझाया - 'बेटा! अधिक क्रोध मत करो, इसे छोड़ दो। कोई किसी को हानि नही पहुँचा सकता। अपने किये के अनुसार ही हानि प्राप्त होती है। अतः किसी पर क्रोध करना अच्छा नही है। निर्दोष राक्षसों को जलाना बंद करो। आज से यह अपना सत्र ही समाप्त कर दो। सज्जनों का काम क्षमा करना होता है।' पराशर ने इसी सलाह को स्वीकार किया। वरदान के रूप में विष्णु पुराण के रचयिता बने।

वशिष्ठ ऋषि और उनकी वंश परंपरा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, वशिष्ठ के तीन जन्म हुए थे। प्रथम जन्म में वशिष्ठ जो कि ब्रह्म के मानस पुत्र थे, दूसरे जन्म में इक्ष्वाकु वंश के राजपुरोहित तथा तीसरे जन्म में मैत्रावरुण के रूप में इनका जन्म

हुआ था। पुराणों में, अलग-अलग काल में जन्मे कुल बारह वशिष्ठों का जिक्र है। वशिष्ठ जो ब्रह्म के पुत्र थे उनके नाम से ही कुल परंपरा का प्रारंभ हुआ तो आगे चलकर उनके कुल के अन्य देवज्ञों लोगों ने भी अपना नाम वशिष्ठ रखकर उनके कुल की प्रतिष्ठा को बरकरार रखा। महर्षि वशिष्ठ की सुदीर्घकालीन उपस्थिति के संदर्भ में पौराणिक साहित्य के अध्येताओं का एक मत यह भी है कि ब्रह्म के पुत्र वशिष्ठ के नाम पर आगे चलकर उनके वंशज भी वशिष्ठ कहलाए। इस तरह 'वशिष्ठ' केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि पद बन गया और विभिन्न युगों में अनेक प्रसिद्ध वशिष्ठ हुए।

सूर्यवंश के कुलगुरु

पौराणिक संदर्भों के अनुसार, ब्रह्म की आज्ञा से वशिष्ठ ने सूर्यवंशी राजाओं का पौरोहित्य स्वीकार किया था। कहते हैं कि इक्ष्वाकु ने 100 रात्रियों का कठोर तप करके सूर्य देवता की सिद्धि प्राप्त थी की और वशिष्ठ को गुरु बनाकर उनके उपदेश से अपना पृथक राज्य और राजधानी अयोध्यापुरी बनाई। तब से वशिष्ठ ने सूर्यवंशी राजाओं की सेवा की। उन के रहने पर ही दशरथ ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया था। तब से लेकर हर संदर्भ में यहाँ तक कि रावण के वध के बाद राम के पट्टाभिषेक भी उन्होंने कराया था वशिष्ठ महाभारत के काल में भी हुए थे। प्रथम वशिष्ठ की पत्नी अरुंधती से उत्पन्न पुत्रों के कुल में ही आगे चलकर महाभारत के काल में एक और वशिष्ठ नाम से प्रसिद्ध हुए ऋषि थे जिनके पुत्र का नाम शक्ति मुनि और पौत्र का नाम पराशर था। पराशर के पुत्र महाभारत लिखने वाले मुनि वेदव्यास थे।

महर्षि वशिष्ठ द्वारा लिखे गए पुराण

ऋग्वेद के सातवें मंडल के रचयिता गुरु वशिष्ठ जी हैं वशिष्ठ संहिता और योग वशिष्ठ के रचनाकार वशिष्ठ हैं इनमें श्रीराम और वशिष्ठ जी के बीच में जो वार्तालाप हुए हैं प्रकृति और प्रकृति से संबंधित इंसान की चिंताएँ एकाग्र चित्त मन कैसे किया जाता है इन सब के बारे में काफी बताया गया है। वशिष्ठ वंश के रचित अनेक ग्रन्थ अभी उपलब्ध हैं। जैसे वशिष्ठ संहिता, वशिष्ठ कल्प, वशिष्ठ शिक्षा, वशिष्ठ तंत्र, वशिष्ठ पुराण, वशिष्ठ स्मृति, वशिष्ठ श्राद्ध कल्प आदि इनमें प्रमुख हैं।

वशिष्ठ ऋषि की संपूर्ण जानकारी वायु, ब्रह्मांड एवं लिंग पुराण में मिलती है। वशिष्ठ कुल ऋषियों एवं गोत्रकारों की नामावली मत्स्य पुराण में दर्ज है।

वशिष्ठ के दो मुख्य आश्रम थे। पहला हिमाचल प्रदेश के मनाली से करीब चार किलोमीटर दूर लेह के पास वशिष्ठ नामक गाँव में।

दूसरा राजस्थान के पुष्कर में। विश्वामित्र के साथ वैर के कारण सभी को खोकर वशिष्ठ ने प्राण त्याग भी करना चाहा। किंतु नदी के द्वारा यह कहने पर कि वह उनके प्राणों को नहीं ले सकती है। उसी नदी के पास बाद में वशिष्ठ ने अपना आश्रम बनाया था।

हिमाचल प्रदेश के मनाली से करीब चार किलोमीटर दूर लेह राजमार्ग पर वशिष्ठ नामक एक ऐसा गाँव स्थित है, जो अपने दामन में पौराणिक स्मृतियाँ छुपाये हुआ है। महर्षि वशिष्ठ ने इसी स्थान पर बैठकर तपस्या की थी। कालान्तर में यह स्थान उन्हीं के नाम से जाना जाने लगा।

वशिष्ठ ऋषि का यहाँ भव्य प्राचीन मंदिर बना। हिंदू पुराणों में इस रूप में महर्षि, देवर्षि और उन से बढकर बडे ज्ञानी के रूप में वशिष्ठ अंकित हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ति.ति.दे. पंचगव्य उत्पादक

नमामि गोविंदा

वेद संस्कृति में गोमाता का एक विशिष्ठ स्थान है। गोमाता से उत्पन्न गोबर, गोमूत्र, घी, दूध और दही मानव जाति की पेशकश की अमूल्य पंचगव्य के रूप में जाना जाता है। इन पंचगव्यों के द्वारा ति.ति.दे. १५ प्रकार के आयुर्वेदिक उत्पादक तैयार करती है।

१. धूप - उत्पादक - अवनि धूप चूर्ण, धरणी अगरबत्ति, धात्री साम्ब्रानी कप्स, वैष्णवी धूप स्टिक्स और वाराही धूप कोन्स के नाम से पाँच प्रकार के धूप उत्पादकों को तैयार किया जाता है। इस धूप का प्रयोग करने से बाक्टिरियाँ, वायरस और वायू प्रदूषण को कम करती है।

२. पृथ्वी - विभूति - प्राचीन शास्त्र में कहा गया कि इसे पंच-भूतात्मक होमगुण्ड में गोमूत्र, गरिका, कर्पूर, गाय घी के द्वारा तैयार किया जाता है। इस विभूति को माथे पर लगाने से मंगलमय है और स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है।

३. धन्विका - टूथ-पाउडर - प्राचीन आयुर्वेद वैद्यशास्त्र में कहा गया कि यह अमूल्यमय मूलिकों तथा लवंग, आमला के द्वारा तैयार किया गया दंत पाउडर है। इस दंत मंझन प्रयोग करने से दांत के संबंधित अनेक समस्याएँ दूर हो जाएँगे।

४. हिरण्यमय - हेर्बल फेस प्याक - हल्दी, मंजिष्ट आदि मूलिकों से तैयार किया गया फेस प्याक लगाने से त्वचा के रंग को निखारती है। जडी-बूटियों से बन यह फेस प्याक का उपयोग करने से पिंपल्स, ब्लैक-हेड्स और डार्क सर्कल्स (आंखों के नीचे अंधेरा छाया) को कम करने के लिये उपयोग किया जाता है।

५. माही - हर्बल साबुन - गोमूत्र और क्रिन के तैल जैसी अमूल्यमय साधनों से बना एक प्राकृतिक साबुन है। इसका उपयोग करने से त्वचा की

The Panchagavya products, Agarabatthis and Srivari Photo frames are kept for sales in the following places. Devotees are appealed to utilize this facility

Sl. No.	Name of the Sales Counter	Place
01	Srivari Laddu Counter complex	Tirumala
02	Opposite to Srivari Temple	
03	Opposite to Lepakshi emporium	
04	Anna Prasadam complex	
05	Opp. to T.T.D Administrative Building, K.T.Road	Tirupati
06	Sri Kapileswara Swamy Temple premises	
07	Dhyanamandiram stall (Beside Sri Govindarajaswamy Chariot)	
08	Sri Govindarajaswamy Temple	
09	Stall at Vishnu Nivasam complex	
10	Sri Kodandarama Swamy temple	
11	Stall at Srinivasam complex	
12	East Railway Station	
13	Sri Padmavathi Ammavari Temple premises	Tiruchanur
14	Sri Kalyana Venkateswara Swamy Temple premises	Srinivasa Mangapuram

रक्षा करने और त्वचा संबंधी रोगों को रोकने के लिए उपयोग करते है। यह त्वचा पर रहने वाले रोगजनक सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर देती है।

६. कश्यपी - हेर्बल सांपू - गोमूत्र, ज्वार, रसभरी और नारियल के तेल के मिश्रण से बना यह सांपू सिर की रक्षा करने वाले हेर्बल सांपू के रूप में बहुत उपयोगी है।

७. उर्वि-नाजल-ड्रॉप्स - गोबर, गोक्षीर और तिल के तेल से बनी यह नाजल-ड्रॉप्स सुबह के समय उपयोग करने से सिरदर्द और बार-बार होने वाले जुकाम को कम कर सकती है। आँख और कान को अच्छे हो जाते है।

८. नंदिनी - गोअर्क - गोमूत्र को एक विशिष्ठ प्रक्रिया से गर्म करके माप को ठंडा करके तरल में डाल दे। यह दुनिया भर में कैंसर, सांस की बीमारियों के इलाज में एक विशिष्ट उपाय के रूप में प्रयोग किया जाता है।

९. भूमी - हेर्बल फ्लोर क्लीनर - यह फ्लोर क्लीनर गाय के गोबर में मुख्य धरक के रूप में चूने और देवदार के तेल से बनाया जाता है। यह एक कीटाणुनाशक के रूप में कार्य करता है।

१०. 'क्षमा' - गौ उपले और 'भुवति' - गौ उपले की सलाख (कौअ-डंगूलागूस) - देशी गाय के गोबर, चावल की भूसी और लकडी की भूसी से यह पदार्थ तैयार किया जाता है। इन्हें होमम्, यज्ञ-यागादि क्रियाओं में दहन के लिए उपयोग करना आदर्श माना जाता है।

Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati

PRICE LIST OF PANCHAGAVYA PRODUCTS

Sl. No.	Name of the Product	Weight / Volume	Sale Price
1.	Avani - Dhoop Choornam	50 gms	70/-
		100 gms	115/-
2.	Dharani - Dhoop Agarbatti	12 sticks	60/-
		24 sticks	110/-
3.	Dhaatri - Dhoop Cups	6 cups	70/-
		12 cups	110/-
4.	Vaishnavi - Dhoop Sticks	20 sticks	30/-
5.	Varahi - Dhoop Cones	12 cones	30/-
		24 cones	50/-
6.	Prithvi - Vibhooti	10 gms	30/-
		30 gms	40/-
		50 gms	60/-
		100 gms	100/-
7.	Dhanshika - Tooth Powder	50 gms	40/-
		100 gms	60/-
8.	Hiranmayi - Face Pack	50 gms	110/-
		100 gms	200/-
9.	Mahi - Soap	25 gms	40/-
		75 gms	80/-
		100 gms	110/-
10.	Kashyapi - Shampoo	5 ml	10/-
		100 ml	210/-
11.	Urvi - Nasal Drops	10 ml	100/-
12.	Nandini - Go Ark	200 ml	50/-
		500 ml	110/-
		1 ltr.	200/-
13.	Bhumi - Floor Cleaner	1 ltr.	250/-
		5 ltr.	1050/-
14.	Ksama - Cow Dung Cakes	10 nos.	140/-
		12 nos.	170/-
15.	Bhuvati - Cow Dung Logs	06 nos.	90/-
		12 nos.	180/-

For Details Contact : 0877-22633333, 0877-22677777

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

नमामि गोविंदा

पंचगव्य : गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच उत्पादकों को पंचगव्य कहा जाता है। इनके दवाई गुणों से इनका आयुर्वेद में अधिक उपयोग है। मानव जीवन के उपयोग के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने इन्हें पंचगव्यों के रूप में तैयार करना आरंभ किया है। प्रत्येक उत्पादन को 'नमामि गोविंदा' नाम के अंतर्गत तैयार और बेचा जा रहा है। तैयार करते समय पूरी सावधानी भरती जा रही है।

अगर बत्ती : तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर को तथा तिरुपति में स्थित देवस्थान के अन्य मंदिरों में समर्पित अमलिन व पवित्र पुष्पों को प्रत्येक दिन संग्रहीत किया जाता है। उन्हीं से सात प्रकार की अगर बत्तियाँ (सुगंधित बत्तियाँ) तैयार की जाती हैं।

पुष्प प्रसाद : तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर को तथा तिरुपति में स्थित देवस्थान के अन्य मंदिरों में समर्पित अमलिन व पवित्र पुष्पों को सूखी-तकनीकी से सुखा कर उन से फोटो फ्रेम, की-चइन, पेपर वइट, डालर्स, पेन-स्टांड आदि तैयार किए जाते हैं।

Designed by SVBC,TTD

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

‘पंचगव्यों’ से तैयार किए गए उत्पादक

उर्वि नासल बूंद
सर्दी और सर दर्द को कम करती हैं और आंखें, कान तथा नाक के काम को सुगम बनाती हैं।

भूमि हेर्बल फ्लोर क्लीनर
फर्स को साफ बनाता है तथा प्राकृतिक द्रव्यों के द्वारा फर्स को सुगंधित तथा कीटाणुओं से दूर रखता है।

नंदिनी गो-अर्क
नियमित रूप से उपयोग करने से दीर्घायु के साथ-साथ जीवन का स्तर बढता है।

क्षमा गौ उपले
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

भुवति गौ उपले की सलाख
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

अवनि धूप चूर्ण
दुआँ सारे कीटाणुओं से बचाता है।

धरणी अगर बत्ती
भूदेवी की समस्त अच्छाइयों से भरी।

धात्री सांभ्राणी कप्स
स्वास्थ्य के लिए अच्छा।

वैष्णवी धूप स्टिक्स
हवा को स्वच्छ बनाती है।

वाराही धूप कोन्स
चारों तरफ पवित्रता को बिखेरती हैं।

पृथ्वी विभूति
शिव का पवित्र द्रव्य।

दन्षिका हेर्बल टूथ पाउडर
दांतों तथा मसूडों का संरक्षण करता है।

हिरण्मयी हेर्बल फेस प्याक
चेहरे के रंग को अकर्षणीय बनाता है।

मही हेर्बल साबुन
चमडी को सुरक्षित रखता है।

कश्यपी हेर्बल सांपू
चमडी को सुरक्षित रखता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

समर्पित पुष्पों से (सूखी-तकनीकी से) तैयार किए गए उत्पादक

फोटो फ्रेम्स और की-चैन्स (सूकी-तकनीकी से बनाए गए)

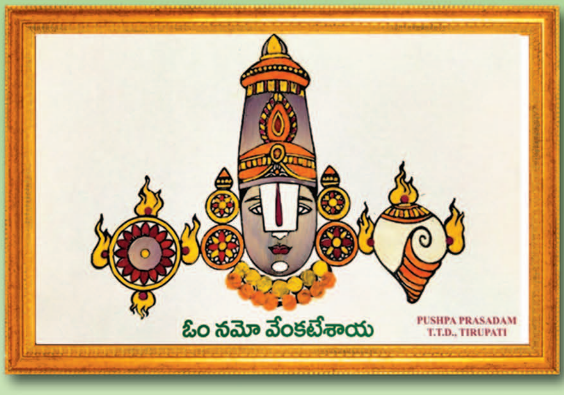

अगर बत्तियाँ (भगवान को समर्पित पुष्पों से बनायी गयी)

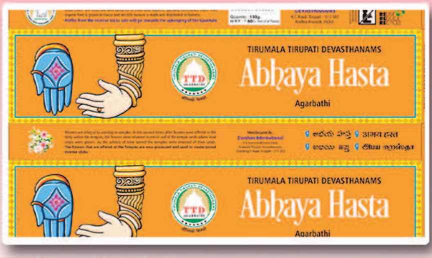

बृहद या बहुत बडा कौन है?

भू या भूमाता!

'बृहद' या 'बहुत बडा' संस्कृत में भू या भूमाता के लिए प्रयुक्त होनेवाला नाम है। भूदेवी हिंदू धर्म में गाय के साथ तथा बौद्ध धर्म की कुछ शाखाओं के साथ संबंध रखती हैं।

गाय का पीछे वाला भाग अत्यंत पवित्र है। पीछेवाले भाग में मुख्य रूप से गाय की गूदड और थन होते हैं। ये ही गाय के गोबर और दूध के मूल स्रोत हैं। आर्थिक रूप से गाय के मुख्य उत्पादक भी ये ही हैं। इनका घरेलु कामों में अधिक उपयोग है। गाय के गोबर से फर्स को पोता जाता है। साथ ही गोबर के उपलों को जलावन के रूप में उपयोग किया जाता है। गाय के दूध तो श्रेष्ठ आहार है।

इसलिए गाय का पिछला भाग लक्ष्मी स्वरूपा है। जो संपदा की स्वामिनी और विष्णु भगवान की देवेरी है। महाविष्णु भूदेवी का संरक्षक हैं। इसलिए 'नमामि गोविंदा' के उत्पादकों के नाम भूदेवी के पर्यायवाची शब्दों से चुने गए हैं।

माता रुद्राणां, दुहिता वसूनाम्,
स्वसाऽऽदित्याना ममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकुतुषे जनाय,
मा गा मनागा मदितं वधिष्ट।। (ऋग्वेद)

रुद्रों की माँ, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की सहोदरी, समस्त मानवों को अमृत समान दूध देकर पोषण करने वाली माँ ही गो-माता है। ऐसी गाय को हमारी भारतीय संस्कृति, संप्रदाय में माँ जैसी सर्वदेवता स्वरूपिणी के रूप में आराधना किया जा रहा है।

ग्राहक संरक्षण - 1800 425 4141
ईमेल - helpdesk.ttd@tirumala.org

श्री प्रपन्नामृतम्

(33वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

(गतांक से)

एक बार श्रीवैष्णवों ने आकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य से प्रार्थना की कि आपने अन्य मतों का खण्डन करके वेदान्त दर्शन की स्थापना की है। श्रीमान् अब शास्त्रार्थ द्वारा दिग्विजय करते हुए सिद्धान्त का सभी दिशाओं में प्रचार करें तो बहुत अच्छी बात होगी। तदनन्तर श्री रामानुजाचार्य अपने समस्त शिष्यवर्ग को साथ लेकर तथा श्रीरंगनाथ भगवान की आज्ञा प्राप्त करके कुम्भकोणम् आये और पाण्ड्य देशीय अनेक दिव्यदेशों को प्रणाम करके, वहाँ के विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित करके उन्हें अपना शिष्य बनाते हुए कुरुकापुरी में प्रवेश करके श्री शठकोपसूरि विरचित दश गाथाओं का अध्ययन करके तथा उनके अर्चकों से तीर्थ, तुलसी, शठकोपमाला आदि प्राप्त करके निम्न पद्यरत्न से उनका मंगलाशासन किया :-

बकुल-धवल माला वक्षसि वेदवाह्य
प्रबल समयवादच्छेदनं पूजनीयम्।
विपुलकुरुकनाथं कारिसूनुं कवीशं,
शरणपमुगतोऽहं चक्रहस्तेभवक्त्रम्।।

मौलसिरी की माला से शुभ्र वक्षःस्थल वाले, वेद-वाह्यों के प्रबल सिद्धान्त का खण्डन करने वाले कारि महाराज के पुत्र, विपुल कुरुकापुरी के स्वामी, परम पूजनीय, कवीन्द्र एवं विष्वक्सेन के अवतार श्री शठकोपसूरि की शरण में जाता हूँ। इसके बाद श्री शठकोपसूरि से आज्ञा लेकर वे कुरंग नगरी आये वहाँ नम्बिनारायण भगवान का दर्शन किया। वहाँ के भागवतों ने प्रशंसा की कि श्री रामानुजाचार्य 12 हजार एकान्तियों, 74 पीठाधीश्वरों एवं अनेकों महाभागवतों के साथ श्रीरंगम में विराजते हैं। श्री रामानुजाचार्य की यह प्रशंसा सुनकर श्री नम्बिनारायण भगवान बोले- यतीन्द्र! जब-जब मैं अवतार लेता हूँ तब-तब लोग मुझे प्राकृत नर समझा करते, आप किस तरह सभी को श्रीवैष्णव बनाते हैं। तदनन्तर भगवान श्री रामानुजाचार्य को मखमली आसन प्रदान करके स्वयं अपने आसन से उतरकर उनके सन्निकट भूतल पर खड़े हो गये। इसके बाद यतीन्द्र श्री भगवान का अभिप्राय समझकर उनको मन्त्ररत्न का उपदेश करके उनका दासान्त नाम ''श्रीवैष्णव नम्बि'' रखा। तदनन्तर भगवान ने उन्हें ब्रह्मरथ प्रदान किया। इसके बाद श्री रामानुजाचार्य अपने गुरुदेव पूर्णाचार्य स्वामी एवं भगवान को प्रणाम करके बोले- ''पुरुषोत्तम! आप मेरे सभी अपराधों को क्षमा करें।'' और फिर इसके बाद उन्होंने अपने सम्पूर्ण शिष्यवर्ग के साथ केरल की ओर प्रस्थान किया।

।।श्रीप्रपन्नामृत का ३३वाँ अध्याय समाप्त हुआ।।

क्रमशः

योग साधना प्रयोग और प्रयत्न

- डॉ.गाजुला शेक षावली
मोबाइल - 9885083477

1. योग शब्द की उत्पत्ति

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की यज् धातु से हुई है। योग शब्द का अर्थ जोड़ना है। अर्थात् आत्मा का शरीर से मिलन ही योग है। भारत के षडदर्शन में योग भी एक है। योग को हम व्यायाम भी कह सकते हैं। योग का आरंभ 5000 ई. पूर्व से माना जाता है। उस समय भारत में गुरुकुल परंपरा थी। जिसमें शिष्य, गुरु के समीप रहकर ज्ञान अर्जित करता था। और योग भी गुरु-शिष्य परंपरा से आगे बढ़ा और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित हुआ। पतंजली ने अपने ग्रंथ योगसूत्र में सर्वप्रथम योग दर्शन का वर्णन किया। इसीलिए योग का प्रणेता पितामह तथा जनक पतंजली को ही माना जाता है।

2. जीवन में योग का महत्व

योग हमारे स्वास्थ्य के साथ-साथ सकारात्मक सोच भी प्रदान करता है। योग से हमें ऊर्जा मिलती है। तथा साथ ही गन्दगी से भरे पर्यावरण में खुद को शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वास्थ्य रखा जा सकता है। योग से हमारे जीवन की सभी पीडाओं को दूर किया जा सकता है।

योग से हमें एक सुखी तथा सरल जीवन जीने का अवसर मिलता है। हमारे जीवन में हर तरह से विकास के लिए योग महत्वपूर्ण संसाधन है। योग से मनोरंजन भी किया जा सकता है। तथा भटकते मन को शांति भी प्रदान की जा सकती है।

हमारे जीवन की सारी बाधाओं को दूर करने में योग हमारा सहयोग करता है। योग से हर समस्या का समाधान किया जा सकता है। इसलिए योग को अपने जीवन में स्थान दें तथा सभी को नियमित योग साधना करने के लिए प्रेरित करें। योग करने से हमारा मन संतुष्ट रहता है।

3. योग का स्वास्थ्य पर प्रभाव

योग करने से हमारे शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित होता है। योग से शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जो नियमित रूप से योग करता है। वह व्यक्ति हमेशा सकारात्मक सोच रखता है। तथा हमेशा खुश रहता है। योग से शरीर संतुलित रहता है।

कई लोग छोटे कद के ही रह जाते है। तो कोई मोटापे का शिकार हो जाता है, तो कोई हर समय बीमारियों को पालता है। उन सभी को नियमित रूप से योग करने की जरूरत है। योग से ही हर बीमारी का उपचार संभव है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

भारत सरकार ने योग की महत्ता का देखते हुए भारत सरकार ने 21 जून 2015 को पहली बार योग दिवस के रूप में मनाया। उसके बाद हर वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

योग दिवस को हम बड़ी धूम-धाम के साथ मनाते है। योग करने से हमारी सारी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। योग हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। योग करने से हमारी सोच हमेशा सकारात्मक रहती है। योग करने से हमारे शरीर में शांति बनी रहती है।

5. आंतरिक शांति

योग हमारे शरीर में शांति बनाये रखने तथा हमारी समस्याओं का निवारण करने में हमारी सहायता करता है।

योग करने से हमारा मनोबल बढ़ता है। इसके अतिरिक्त हम किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक कर सकते है।

6. दैनिक जीवन में योग

योग प्रकृति द्वारा दिया गया एक अनमोल उपहार है। योग करने से हमारा शरीर का प्रत्येक भाग सुरक्षित रहता है। योग करते समय श्वसन क्रम सबसे मुख्य माना जाता है।

योग हर रोज नियमित करना चाहिए। योग करने से हमारा शरीर निरोग रहता है। योग करके हम अपने हर असंभव कार्य को संभव बना सकते हैं।

हमारे दैनिक जीवन में योग को सबसे महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। योग कराने के लिए भारत में समय-समय पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। सभी को योग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

7. वर्तमान युग में योग की आवश्यकता

वर्तमान में पूरा विश्व कोरोना वायरस जैसी खतरनाक महामारी की चपेट में है। इस समय में प्रत्येक व्यक्ति तथा परिवार भौतिक प्रतिस्पर्धा से ज्यादा अपने जीवन को महत्व देने में व्यस्त है। ऐसे समय में सबका ध्यान योग पर गया है। क्यों कि योग एक अच्छा माध्यम हैं।

8. योग के प्रकार

योग शास्त्र में योग पांच प्रकार के हैं। हट योग, धन योग, कर्म योग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग। इनका संबंध क्रमशः प्राण मन की क्रिया भावना तथा बुद्धि से है।

पतंजली ने योग की 8 अवस्थाओं का वर्णन अपने ग्रंथ 'योग सूत्र' में किया है। वें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि है।

खुद को जानने तथा पवित्रता के साथ ईश्वर तथा सृष्टि का चिंतन करना नियम कहलाता है। आसन का अर्थ एक विशिष्ट मुद्रा से लिया जाता है। हालांकि पतंजली ने 84 आसनों का वर्णन किया है।

9. प्राणायाम शब्द का अर्थ

वायु को श्वास के रूप में लेना तथा छोड़ देना ध्यान एकाग्रता की स्थिति है। जिसमें व्यक्ति अपनी आत्मा को इस प्रकार वशीभूत कर लेता है कि उसका मन स्थिर अवस्था में आ जाता है। योग की अंतिम अवस्था अथवा सर्वोच्छ स्थिति समाधि की है। इस स्थिति में व्यक्ति स्वयं को ही भूल जाता है।

10. योग से एकाग्रता

योग हमारे जीवन में हर समय अच्छी भावना को हमारे सामने प्रकट करता है। योग को हम अनुशासित रूप से करने पर एकाग्रता के स्तर में सुधार देखने को मिलता है।

यह सामाजिक रूप से हमारी सहायता करता है। ये हमारे हर अंग को शांत बनाये रखने में सहायक है। योग करने के लिए सभी को हमें प्रेरित करना चाहिए।

11. योग के नियम

1. योग करते समय पसीना सोखने वाले कपडे पहन लें।
2. योग करने के तुरंत बाद स्नान न करें।
3. बिना भोजन किये योग करना चाहिए।
4. योग हमेशा अपनी शारीरिक क्षमता के आधार पर ही करना चाहिए।
5. योग हमेशा करना चाहिए।
6. योग करते समय पानी नहीं पीना चाहिए।
7. यदि आप बीमार है, तो योग नहीं करना चाहिए।

12. उपसंहार

योग से हमें कई प्रकार के लाभ होते हैं। योग को हम चमत्कार भी कह सकते हैं। योग करने से हमें आत्मविश्वास मिलता है।

जिससे हम कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूरा कर सकते हैं। इसे हम उपहार भी कह सकते हैं। स्वास्थ्यपूर्ण जीवन जीने के लिए नियमित रूप से योग करना बहुत ही आवश्यक है।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

तुम्म चेट्टुकु मुंड्लु तोडने पुट्टुनु
वित्तुलोनि नुंडि वेडलु नट्लु
मूर्खुनकुनु बुद्धि मुंदुगा बुट्टुनु
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।१०।।

बबूल में, पौदे की अवस्था में ही काँटे दीख पड़ते हैं, मानों वे बीज ही में से निकल पड़ते हों। इसी प्रकार मूर्खों की भी मूर्खता का परिचय जीवन के प्रारंभ काल में ही मिलता है।

जुलाई २०२२

०३-०५ श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का साक्षात्कार वैभवोत्सव
०९-११ तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक
०९-१२ तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का पवित्रोत्सव
१३ गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा
१७ तिरुमल आणिवर आस्थान
२९ श्री चक्रत्ताल्वार वा.ति.न.

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन.सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

वळ्ळै विळिसंगु इजंगकैयिल् कोण्ड
विमलन् एनक्कु उरुक् काट्टान्,
उळ्ळम् पुगुन्दु एन्नै नैवित्तु नाळुम्
उयिर्प्पेय्खु कूत्ताट्टुक् काणुम्
कळ् अविळ् सेण्बगप् पूमलर् कोदिक्
कळित्तु इसै पाडुम् कुयिले
मेळ्ळ इरुन्दु मिळट्री मिळट्रादु एन्
वंगडवन् वरक् कूवाय्।। (546)

कठिन शब्दार्थ - वेळ्ळै - सफेद, उरु-रूप, उळ्ळम्-मन, नाळुम्-हर दिन, सेण्बगम्-चंपक, कुयिल-कोयल, कूवाय-आवाज करो।

भावार्थ - संयोग की दशा में सुख देने वाली प्रकृति, वियोग की दशा में अधिक पीडा देती है। कोयल की आवाज सब को भाता है। लेकिन यहाँ गोदा को उसके प्रति बडी घृणा पैदा होती है। इसका कारण यह है कि उसे अपने प्रिय से मिलन अब तक नहीं हुआ है। इसलिए वह गाती है, अरे कोयल! तुम तो चंपक के पुष्पों से मिलते आनंद को भोगकर अपना मधुर गीत गाते हो। पांचजन्य को अपने बाएं हाथ में धरते महा पुरुष भगवान विष्णु अपने दिव्य रूप को मुझे नहीं दिखाते हैं। लेकिन वे मेरे दिल में आकर बस गए हैं और मुझे बडा दु:ख देकर तडपा रहे हैं। इतना ही नहीं वे मेरी वेदना को खुशी से देख रहे हैं। हे कोयल तुम मेरे निकट आओ और अपनी मधुर तुतली बोली से

मेरे प्रिय को याने जो तिरुवेंकटगिरि पर आकर रहने वाले भगवान विष्णु को यहाँ आने के लिए तुम अपनी मधुर बोली में बुलाओ।

मतलब यह है कि प्रिय के मिलन से ही आनंद का अनुभव होता है। इसलिए उस मिलन को यथाशीघ्र कराने के लिए गोदा मधुर आवाज करती कोयल से अपना निवेदन रखती है।

पाडुम् कुयिल्गाळ् ईदु एन्न पाडल् नल् वेंगड

नाडर् नमक्कु ओरु वाळ्वु तन्दाला वन्दु पाडुमिन्

आडुम् करुळक् कोडी उडैयार् वन्दु अरुळ् सेय्दु

कूडवगायिडिल् कूवी नुम् पाट्टुकळ् केट्टुमे।। (601)

कठिन शब्दार्थ - पाडल-गीत, वाळ्वु-जीवन, करुळक् कोडी-गिद्ध रूप अंकित झंडा, अरुळ्-दया, कूडुदल-मिलन।

भावार्थ - वियोग की वेदना में गोदा के दुःख को मधुर गीत गाते कोयल का संगीत भी बढाता है। इसलिए वह गाते कोयल को देखकर समझाती है, ''हे कोयल! तुम ऐसा क्या गाते हो अब तुम अपनी आवाज बंद कर दो। मेरी भलाई सोचकर जब तिरुवेंकटेश्वर आकर मुझे जीवन दिलाते हैं तब तुम आकर मधुर गीत सुनाओ। उनके झंडे में गिद्ध का रूप अंकित है। गिद्ध रूप अंकित झंडे वाले जब मुझसे मिलकर दया बरसाते हैं, तब मैं तुमको खुद बुलाकर निवेदन करूँगी। उस सुखपूर्ण समय में तुम आकर अपना मधुर राग सुनाओ। तभी मेरा मन प्रसन्न रहेगा और मैं तुम्हारे गीत को खुशी से सुनूँगी।''

मतलब यह है कि प्रिय के मिलने के बाद ही उसके जीवन में आनंद और खुशियाँ पल्लवित होंगी। इसलिए गोदा उस समय आकर अपना मधुर गीत सुनाने के लिए कोयल को देखकर कहती है।

मळैये मळैये मण् पुरम् पूसि उळ्ळाय् निन्ड्रु

मेळुगु ऊट्रिनाल् पोल् ऊट्रु नल् वेंगडत्तु उळ् निन्ड्र

अगप् पिरानार् तम्मै एन् नेंजत्तु अकप्पडत्

तळुव निन्ड्रु एन्नैत् तदैत्तुक् कोण्डु ऊट्रवुम् वल्लैये। (604)

कठिन शब्दार्थ - मळै-वर्षा, मण्-मिट्टी, पुरम्-बाहर, मेळुगु-मोम, नेंजम्-मन, तळुव-आलिंगन करना, तदैत्तु-साथ मिलाना।

भावार्थ - गोदा अपने प्रिय के मिलन के इंतजार में है। वह ऐसा सोचती है कि अपने प्रिय से मिलकर उसके आलींगन में अपने को पूर्ण रूप से मिला देना है। इसके लिए वह एक अनोखे उदाहरण को देकर अपने मनोभाव को प्रकट करती है। याने, पीतल की मूर्ति तैयार करने के लिए कुछ विशेष नियम अपनाए जाते हैं। पहले उस मूर्ति के रूप को एक सांचा मोम से बनाकर उसके अन्दर तथा बाहरी भाग को मिट्टी से ढक देते हैं। उसके बाद पीतल के द्रव रूप को उसके अन्दर छोडते हैं। थोडे समय के बाद वह गरम द्रव मोम को गलाकर दृढ बन जाता है और वह मोम उसके साथ गुल मिल जाता है। फिर उस मिट्टी को निकालकर मूर्ति को पाते हैं।

इस तरीके को जाननेवाली गोदा कहती है कि भगवान विष्णु की मूर्ति को बनाने के पूर्व अपने को मोम के सांचे के रूप में बना लेने को तैयार होती है। उसका विचार है कि पीतल के द्रव में मोम का सांचा बिलकुल गल जाता है। उसी तरह मैं उनके प्रति उठते प्रेम के मारे उनको पूर्ण रूप से आलिंगन करके आनंद मनाऊँगी।

मतलब यह है कि गोदा अपने को पूर्ण रूप से प्रिय के हाथ में सौंपना परम भाग्य समझती है।

क्रमशः

गतांक से

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

ब्रह्म-इंद्रादि स्वामी की स्तुति करना :

दंडक : (ब्रह्म-इंद्र आदि देवताओं के द्वारा वराह स्वामी का स्त्रोत्र)

हे महा श्वेत वराह स्वामी! हे सत्क्रोड रूपा! हे बोध प्रदीपा! हे ब्रह्मांड के भूपाल! हे हिरण्याक्ष काठिन्नय संहारा! हे सुराधारा! हे धात्री उद्धारा! हे धर्माद्री धीरा! हे जगत चित्सारा भूता! हे भवांबुधिपातो! हे सुमोक्ष प्रदाता! हे पंचभूत प्रभु! हे श्रीकर! सुप्रसन्न होकर हमारी रक्षा करो! हे रमाधीश! आप के सत्प्रभावों की गिनती सहस्रों में है हम कैसे कर पायेंगे! आप के इस महा भीकर उग्र रूप को देखने में हम असमर्थ हैं। सामान्य मनुष्य आप के इस भीकर रूप को देखकर भयभीत हुए हैं। हे जगत्पिता! धरती का उद्धार करने अवतरित हुए। सदा शांत-सौम्य रूप में श्री-भूदेवी समेत रहकर देवताओं एवं मनुष्यों के जीवन को धन्य बनाइए। सदा नित्य सेवाओं से आप के प्रति भक्ति दिखाने की कृपा कीजिए। सदा अपनी दिव्य लीलाएँ दिखाते रहिए! इसी क्रीडाचल पर सदा बसिए! हे पूर्णकामा! हे पुरुषोत्तम! हे गुणोत्तम! हे देवोत्तम! हे देवतासार्वभौम! हे तरिगोंडधाम! हे नरसिंह! हे वराहावतार! नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमः!

ऐसा स्तोत्र करते सारे देवतादि ने अनेक प्रकार से वेदयुक्त रीति में स्वामी की स्तुति की। इससे प्रसन्न होकर वराह स्वामी दयासिंधु बने। ब्रह्मादि देवताओं को देखकर इस रूप में कहा। ''हे देव गण! राक्षस के संहार के लिए मैंने उग्र अवतार लिया। राक्षस का संहार किया। धरती को ऊपर उठाया, सागरों की रक्षा की। अब आप आनंद से अपने-अपने स्थानों पर जाकर पहले की तरह अपने-अपने कर्तव्यों को करते रहिए। ग्रह उपग्रह अपने स्थानों में पहले की तरह विचरण करते रहे। मैं सौम्य रूप में समुद्र तनया को अपने वक्षःस्थल पर रखूँगा। सुंदर रूप में सभी भुवनों एवं मनुष्यों की रक्षा करता रहूँगा। सदा उनके काम्यार्थों की पूर्ति करता रहूँगा। उन्हें भवबाधाओं से मुक्त करूँगा।'' ऐसा कहते स्वामी ने उन को आज्ञा देकर बिदा किया। महोग्र और विकृत वराह स्वामी ने सौम्य रूप धारण किया। इस के अतिरिक्त वरों की वर्षा उन पर बरसाकर शांत मन से क्रीडाचल में बसे।

क्रीडाचल पर स्वामिपुष्करिणी की पश्चिम दिशा में बसे स्वामी। उसी भव्य पुष्करिणी की वायव्य दिशा में चित्र विचित्र मंडपों का निर्माण हुआ। दिव्य नीलस्तंभ नव्य मरकतकुंभ उन्नत मंडप भी बने। सूर्य किरणों से सुशोभित रत्न गोपुर और प्राकार दिवारें भी निर्मित हुई। स्वामी के आलय के ऊपर विमान भी बना। वहाँ स्वामी भूदेवी और श्रीदेवी समेत बस कर धरती पर अत्यंत प्रचलित हुए।

ऐसे भू-वराह स्वामी को देखकर ब्रह्म-रुद्र प्रसन्न हुए। ऐसे समय अचानक स्वामी विमान सहित अदृश्य हो गए। तब ब्रह्म-रुद्र जय जयकार करते स्वामी के अदृश्य होने की दिशा को नमस्कार करके वराह स्वामी की प्रशस्ति की है। उस के उपरांत वे अपने निजी स्थानों पर चले गए। तद्पश्चात भूदेवी और श्रीदेवी ने अपने परिजनों के साथ मिल कर स्वामी को प्रणाम किया। उन्हें देखकर हरि ने लक्ष्मी से इस रूप में कहा।

श्रीहरि और लक्ष्मी के वार्तालाप :

''हे लक्ष्मी! तुम मुझे देखकर भयभीत हो जाओगी समझ कर तुम्हे यहाँ पर बुलाने से दूर रहा। तुम्हारे करुणा से परिजनों के साथ यहाँ पर चले आना बहुत अच्छा हुआ।'' यह सुनकर लक्ष्मी ने इस रूप में कहा। ''हे स्वामी! आप को छोड कर एक पल भी मैं कैसे दूर रह पाऊँगी। इसलिए इस धरती पर आ गयी हूँ। हमारी गलतियों को भुलाकर हमारा उद्धार कीजिए।'' यह सुनकर हँसते हुए स्वामी ने लक्ष्मी से कहा। ''पूरी धरती भर छान मारने पर मुझे यह स्थल अच्छा लगा। यहाँ बसने का मन हुआ। हे कोमली! यही हमारा वैकुंठ है। यहाँ के फलों के वृक्ष, फूलों की ये लताएँ, यहाँ के

पुण्य तीर्थ, मुनियों के आश्रम मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं। धरती के लोग इन से धन्य हो जायेंगे। देखते-देखते मुझे भी बहुत संतोष होने लगा है। इसलिए मैं यहीं पर रह गया। भूलोकवासियों का उद्धार करने का काम बच गया। उस के लिए यहीं रहना अच्छा है। मेरे मन के अनुकूल और तुम्हारे मनोनुकूल यहीं पर हम रहेंगे।'' यह कहते स्वामी ने लक्ष्मी की सम्मति मांगी। यह सुन कर लक्ष्मी हंसते हुए स्वामी को देखकर इस रूप में कहा। ''आप सर्वज्ञ हैं। इसलिए आप जहाँ रहेंगे हम सब वहीं रहेंगे। हमें कोई चिंता नहीं है देव! आप ही की इच्छा है देव!'' लक्ष्मी के इस रूप में कहने पर स्वामी ने लक्ष्मी को अपने वक्षःस्थल पर धारण किया। तब वराह स्वामी पूर्ण कलापूर्ण बने। तब भूदेवी और श्रीदेवी समेत वराह स्वामी पृथ्वी पर बडी उदारता से राज करने लगे। विपुल पराक्रम राजाओं और भक्तों की निष्कपट भक्ति पाकर स्वामी लक्ष्मी समेत सुखी रहने लगे।

स्वामिपुष्करिणी का प्रभाव :

सूत के द्वारा पुराण सुननेवाले शौनकादि ने सूत से इस रूप में कहा। ''हे स्वामी सूत! स्वामिपुष्करिणी के बारे में हमें बताइए।'' इस रूप में पूछने पर सूत ने उन दिव्य मुनियों से इस रूप में कहा। ''हे मुनिगण! वैकुंठ में रहनेवाले क्रीडाचल पर रहनेवाली पुष्करिणी में सुगंध-परिमल से भरा पानी सदा रहता था। वहाँ पर श्रीदेवी और भूदेवी के साथ स्वामी क्रीडा किया करते थे। वे स्वामी ही श्रीदेवी और भूदेवी के साथ क्रीडाचल पर बसने धरती पर उतर आये हैं। हरि के मनोनुकूल गंगादि नदियाँ यहाँ इस तीर्थ में अखिल जनों के पापों को दूर करने प्रवाहित हुई हैं। इस के अतिरिक्त यह पुष्करिणी सब के इष्ट कार्य भी पूरा करनेवाली है।

ऐसी स्वामिपुष्करिणी के दर्शन से और उस के जल को पान करने से स्त्री, शूद्र जनादि अपने जन्म को धन्य बना लेंगे। इस के अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक स्नान संध्यावंदन करनेवाले ब्राह्मण भी इस में स्नानादि करने से पुण्य प्राप्त करेंगे। इस के अतिरिक्त पुष्करिणी के स्नान के साथ-साथ एकादशी व्रत, सद्गुरु पाद सेवा आदि करने से विशेष फल प्राप्त होगा। ऐसा अवसर अन्यत्र दुर्लभ है। सकल स्थावर जंगम प्राणियों में मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ जन्म है। ऐसे मनुष्य जन्म में वेंकटाद्री में रहते हुए पुष्करिणी में स्नान करना अत्यंत पुण्यप्रद है। इसलिए वेंकटाद्रि माहात्म्य और पुष्करिणी के प्रभाव के बारे में बताना बहुत कठिन है। इसलिए संक्षेप में बताने की चेष्टा करूँगा। इसके इतिहास के बारे में बताऊँगा। ध्यान से सुनिए ''हे मुनिगण! सूत ने आगे इस रूप में कहा।'' पूर्व काल में ताराकासुर का वध करनेवाले कुमार स्वामी को ब्रह्म हत्या करने का पाप लग गया। ब्रह्म हत्या के दोष से मुक्त होने केलिए शिव पुत्र कुमार स्वामी ने इसी पुष्करिणी में स्नान किया। अपने ब्रह्म हत्या पाप से मुक्त हो गए। इस पुष्करिणी की महिमा के बारे में सुनकर कुमार स्वामी शीघ्र ही वेंकटाद्री पर पहुँच कर इस पुष्करिणी में स्नान करके वराह स्वामी के दर्शन करके उन की प्रार्थना की है। तब वे अपने पाप से मुक्त हो गये।

इसलिए वेंकटाद्री में स्थित यह पुष्करिणी भयंकर पापों को भी दूर करनेवाली है। सारे पापों को पावन बनानेवाली पुष्करिणी है। इस धरती पर ऐसी पुष्करिणी दूसरी नहीं है। इसलिए सारे राजा और जन समेत सारे लोग पाप निवारण के लिए यहीं पर आते हैं। इस रूप में यह पुष्करिणी राजाओं से ही नहीं बल्कि रुद्र, शुक्र आदि देवताओं से भी सेवित है। इस रूप में यह सकल लोगों को श्रीकर और शुभकर बनी है। हरि कल्याण का यह गुण सदा यहाँ पर रहेगा। और बहुत कुछ कहने का मतलब भी यही है। एक ही पुष्करिणी है। ''हे पंडितगण! सुनिए! प्राकृत जनों को यह प्रकृति की तरह, पुण्यात्माओं को यह पुण्य तीर्थ की तरह दिखाई पडेगी।''

"ऐसी पुष्करिणी के तट पर वेंकटाचल में स्वामी वराह मूर्ति जनों को पुण्य दर्शन देते हैं। यह पर्वत ही अत्यंत महत्ववाला पुण्य स्थल है। इस में कोई संदेह नहीं है। यह सत्य है।" ऐसा कहनेवाले सूत को देख कर शौनकादि मुनियों ने इस रूप में आगे पूछा।

वराह देव की विहार लीलाएँ :

"यह वराह देव उस पर्वत पर रहते क्या कर रहे थे? किन-किन को क्या दिया? सुनने की इच्छा पैदा हुई। हमें उस के बारे में बताइए। हे सूत!" उन की बातें सुन कर सूत ने इस रूप में कहा। "वे महान वराह देव उस गिरि पर अत्यंत शोभायमान रूप से रहते, अपनी देवेरियों के साथ अत्यंत प्रसन्न थे। वन पुष्पों से प्रकाशवान, पौधे-झुरमुटों के बीच में क्रीडा करते, पर्वत सानुओं में विहार करते थे। क्रीडाचल पहाड पर सुगंध से भरे फूलों पर भ्रमरों की झुंड दावा बोलते, शीतल पर्ण कुटीर मंदिरों की तरह रमणीय लग रहे थे। फूलों के मकरंद से भरे पुष्पवाटिकाओं में स्वामी अपनी देवेरियों के साथ विहार लीलाएँ कर रहे थे। इस के अतिरिक्त स्वामी अधर्मी लोगों के पापों को दूर करते थे। इस के साथ ही धर्मचित्त पुण्य लोगों को सुख प्रदान करते थे। वैसे ये गुण श्रीहरि के नैसर्गिक गुण हैं। ऐसी जरूरत पडने पर धर्मकर्ता बनकर हरि सदा अवतार लेकर धरती पर आया करते थे।

रात होने पर बार-बार ब्रह्म के सो जाने से हरि सकल गुरु बन कर जागकर धरती की रक्षा करते थे। फिर ब्रह्म की नींद से जागने के बाद सृष्टि-कार्य को उन्हें सौंप कर अपनी सखियों से क्रीडा करते थे। हरि के मीन, वराहादि अवतार ऐसे क्रम में ही अवतरित हुए हैं।

वे इस क्रम में दुष्टों का संहार करके शिष्टों की रक्षा करते थे। ऐसे ही वराह कल्प में एक दिन ब्रह्म चक्री के पास जाकर उन्हें नमस्कार करके विनय के साथ इस रूप में निवेदन किया।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

परमात्मा हमें कई कोणों से इस विषय को बता रहे हैं कि हमारा शरीर और आत्मा दोनों भिन्न हैं। सत्त और असत्त दो पदार्थों का विभाजन कर सत्त अर्थात् तीन कालों तक रहने वाला पदार्थ। वह आत्मा के अलावा कुछ नहीं। शरीर और शेष वस्तुएँ एक काल में आकर दूसरे काल में चली जाती हैं। इसीलिए यह सत्त नहीं असत्त होते हैं। ऐसे हमारे सद्विवेक को परमात्मा ने उपदेश दिया। नित्य रहने वाला स्वरूप ही आत्मा होता है वैसे ही देहादि भी अनित्य होते हैं यह भी कहा है। तदनंतर इस श्लोक द्वारा बताए जाने वाले विषय में छोटा उपसंहार भी किया जा रहा है-

''वेदाविनाशनं नित्यं य
एनमनुज मव्ययं
कथं स पुरुषः पार्थ
कघातयति हंतिकं।।''

हे पार्थ! विस्तृत रूप से सोचने वाले अर्जुन! जो भी इस आत्मस्वरूप को अविनाशी अर्थात् विनाश न होने वाला जान लेता हो नित्य जो जान लेता हो ''वेद अविनाशनं नित्यं य एवं आजंव्ययं अजं'' अर्थात् जन्म न लेने वाला जो जान लेता हो ''अव्ययं '' किसी भी

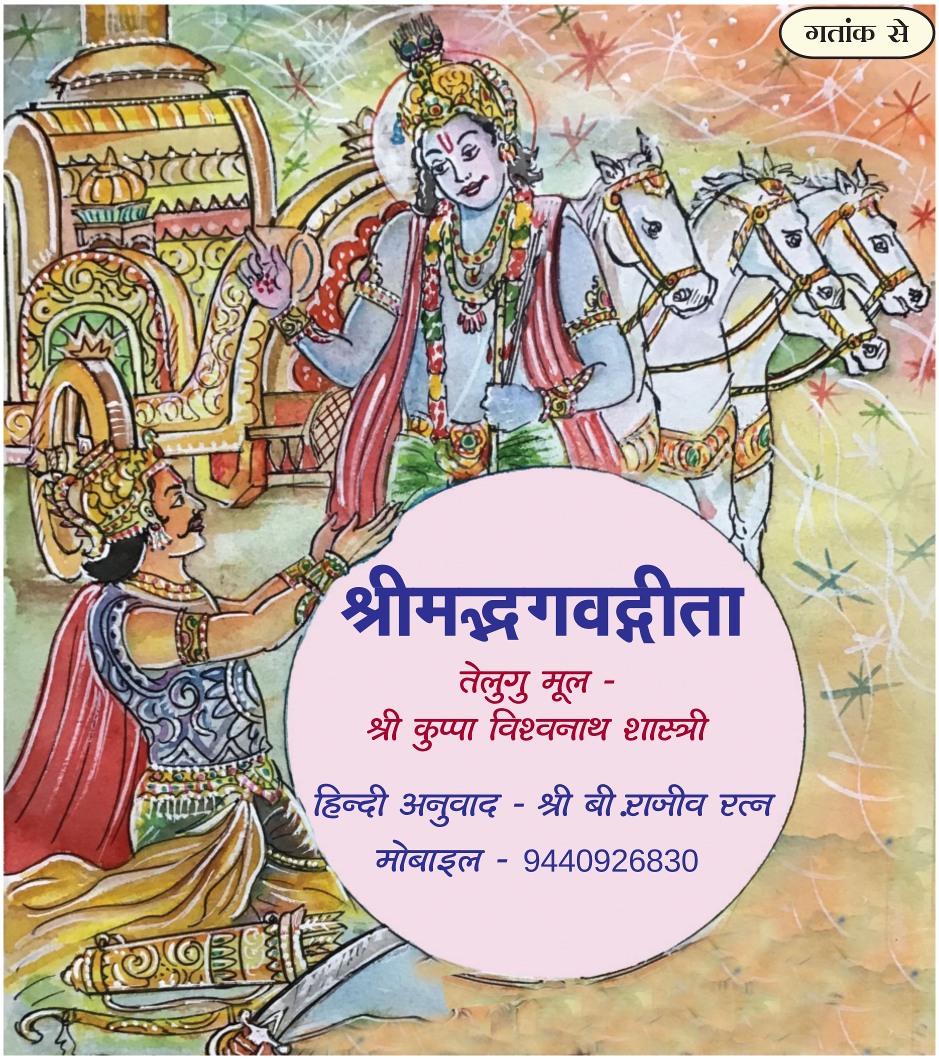

तरह व्यय, विनाश न होगा ये जो जान लेता है ऐसे पुरुष ''कथमं सपुरुषः पार्थ कमं झायति हति कं।''

आत्मस्वरूप नित्य रहने वाला किसी भी प्रकार के विकार न रखने वाला किसी प्रकार की क्रियाएँ न करने वाला जान लेने के पश्चात् अज्ञानी किसका संहार करेगा? किसी प्रकार की क्रियाओं को प्रेरित करेगा? ''कथनं सपुरुषः पार्थाथकं ज्ञातयति हतिकं।''

किसी को मारने या संहार करने के लिए प्रेरित कर सकता है? अर्थात् आत्मस्वरूप में किसी भी प्रकार की क्रियाएँ नहीं होतीं। यह जान लेने के पश्चात् मुझ में आत्मस्वरूप का अर्थ - ''मैं ही न'' मुझ में किसी भी प्रकार की क्रियाएँ नहीं है। जानने के बाद इस क्रिया को मैं कर रहा हूँ कोई नहीं कह पाएगा। - ''कथं'' किस तरह कहेगा, स्वरूप जानने के पश्चात् कह नहीं पायेगा। सारी बातें स्वरूप जानने तक ही, नहीं तो स्वरूप सही ढंग से न जानने पर। सच बात स्वरूप

जानने के बाद ही आती है। तब यह बात नहीं आएगी पुनः कह रहे हैं ''वेद अविनाशनं नित्यं य एन मजमव्ययं'' ऐसे इस श्लोक को सुनने के बाद बहुत दिनों से रहा संदेह पुनः आता है। इसी विषय को ''अविनाशितु तात्विद्वि'' ऐसे ही ''नजायते म्रियतेव'' इस प्रकार आत्म स्वरूप विनाश नहीं होता। आत्मस्वरूप नित्य रहता है।

ऐसा एक बार कहना ठीक रहेगा न बार-बार कहने के पीछे परमात्मा का अद्देश्य क्या होगा? पुनरुक्ति बुद्धिजीवियों के लिए दोष है न, एक ही विषय को बार-बार बुद्धिहीन लोग कह सकते हैं एक बात एक बार ही कहे ऐसा होना चाहिए न, परमात्मा इसी बात को क्यों कह रहे हैं? ऐसा प्रश्न आने पर बुद्धिजीवी एक बात एक ही बार कहते हैं कहना गलत होगा। बुद्धिजीवी ही समझने की बात को एक को 10 बार कहते हैं। बुद्धिहीन ही को एक बार कह कर चुप रह जाना पड़ता है। कैसे इसे सोचेंगे। कोई भी विषय कहने के साथ ही समझ में आ जाएगी। यह नियम है ऐसा इस संसार में कोई नहीं कह सकता। असल शब्द ही हमें कहने के साथ ही उस विषय में हमें परिपूर्णता से ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। ऐसा कोई नहीं कह सकता। उस विषय में परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ या नहीं थोड़ा सा ज्ञानी हो तो बताने वाले को पता चलता है कि सुनने वाले से अधिक।

गीत गाने वाला व्यक्ति केवल गीत गाकर नहीं चला जाता है। पहले तान लगाना फिर स्तुति फिर गीत संगीत यह सारे इसीलिए क्योंकि वह राग एक बार सुनते ही मन में स्थिरता से नहीं आता। मन में स्थिरता से रह जाने के लिए वह राग के रूप में तान के रूप में स्तुति के रूप में संगीत के रूप में पुनः एक बार विविध रूप में सुनने के पश्चात् वह राग स्थिर हो जाता है। महान विद्वानों के मन में राग स्थिर होने के लिए कम से कम डेढ़ घंटा लगेगा ''रागस्थैर्य'' कहते हैं वह रागस्थैर्य आरंभ होने के लिए उनको डेढ़ घंटा लगने पर हम जैसे सामान्य श्रोताओं का क्या यह कहने की बात नहीं कि इसीलिए वे तरह-तरह से उस राग को अपने मन में स्थिर करने के लिए विभिन्न रूपों से गाते हैं। इस विषय को हम ग्रहण कर पाए तो उसे हम स्थिर कर पाएंगे। संगीत छोटा विषय नहीं है। वह ''गांधर्वशास्त्र'' वह ''देवविद्या'' ऐसी विद्या के लिए भी यही नियम है।

वही बात साहित्य की भी है। देखा पड़ा समझ गया ऐसी बात नहीं बल्कि एक क्रमानुसार ऐसे हुआ, ऐसे हुआ बताते हुए अपने मन में उसी विषय को स्थिर बनाने का प्रयास होता है। उसी प्रकार पिता-पुत्र को अच्छी तरह पढ़ो कहकर तुम पढ़ो कहकर पुनरुक्ति न होकर तरह-तरह की कहानियाँ महा विद्वानों की कहानियाँ पंडित कैसे प्रसिद्धि पाए उपाख्यान में उन विषयों को बार-बार कहता है। क्यों? बताया जाने वाला विषय पुत्र के मन में स्थिर हो जाए। उसी प्रकार बिटिया को ससुराल भेजते समय माँ उस के सारे अनुभव उसमें स्थिर करती है ताकि वह बिटिया ससुराल में संभलकर, खुशी से रह पाए। उसकी आकांक्षा से बताई हुई बातें बार-बार बताती रहती है। इसीलिए दूसरों के मन में सारे कठिन विषयों को स्थिर रहने के लिए हमें ऐसे विषयों को बार-बार कहते आ रहे हैं। 'आत्म स्वरूपम व्यापकम' कहकर आत्मस्वरूप अविनाशी कहकर नित्य कहने पर सुन छोड़ देते हैं। सुनी हुई बातें मन में स्थिर रहे इसीलिए वे उसे विशेष रूप से यह आत्मा अविनाशी आत्मा व्यापकम आत्मा नित्यम ऐसे कई बार कह रहे हैं। बार-बार कहने पर यह बात बहुत विशेष है, इस विषय को हम बहुत सोचकर संभलकर निर्णय लेकर मन में स्थिर कर लेना चाहिए। जल्दबाजी में न नहीं कहना चाहिए। मान कर भी आगे नहीं चले जाना चाहिए।

परमात्मा एक ही विषय को बार-बार पुनरुक्ति द्वारा एक ही विषय को बार-बार कहकर उस विषय को अपने मन में स्थिर कर रहे हैं। इसे शास्त्रों में बहुत अच्छी तरह ''नमस्त्राणाम जामितास्ति'' कहा गया है।

क्रमशः

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

भृगु के वैकुण्ठ से वापस लौटते ही श्री महालक्ष्मी अत्यंत चिंतित और व्यथित हुईं। उन्होंने सोचा कि ''भृगु ने यह जानते हुए भी कि विष्णु ब्रह्म के पिता हैं, उनका वक्षःस्थल लक्ष्मीदेवी का वास स्थान है, उस पर पदाघात किया। विष्णु तो परब्रह्म हैं। फिर भी उन्होंने सब कुछ सहा। परन्तु यह मुझे और मेरी अहं को स्वीकार्य नहीं है। मुझे तो धक्का पहुँचानेवाला है। पति ने तो ऋषि को क्षमा किया। लेकिन मैं इस स्थिति से समझौता नहीं कर सकती।'' इतना सोचकर निर्णय लिया कि अब वे अपमानित वक्षःस्थल पर नहीं रह पायेंगी। वहाँ से कहीं दूर जाकर उन्हें तपस्या लीन होना है। बस, विष्णु के वक्षःस्थल से निकलकर, रूठकर वैकुण्ठ से निकल पडीं। उनका लक्ष्य स्थान करवीरपुर (कोल्हापुर या कोल्लापुरम्) हो गया। यह करवीरपुर आजकल, महाराष्ट्र प्रान्त में है। वहाँ ठहर कर करवीरपुरवासियों से अर्चित-पूजित होती स्थिर वासिनी हो गयीं तथा तपस्या लीन भी रहीं।

लक्ष्मी देवी के विरह में तडपते हुए विष्णुजी सामान्य मनुष्य की भाँति दुखित हुए। भूदेवी और नीलादेवी दोनों को प्रेम से कहा कि वैकुण्ठ में ही रहें। वे वैकुण्ठ से निकलकर लक्ष्मीदेवी की खोज करेंगे। उन्हें अवश्य वापस लायेंगे। वैकुण्ठ छोडकर भगवान विष्णु वेंकटाद्रि पहुँचे। वहाँ वे एक वल्मीक में घुसे। वल्मीक (बिल) एक इमली के पेड के नीचे था। वह स्वामिपुष्करिणी के तट पर दक्षिण दिशा में था। एक हजार वर्ष तक वे छिपे ही रहे। उस वल्मीक से प्रकाश तो फैल रहा था, पर उसे किसी ने पहचाना तक नहीं था। इसी बीच कलियुग का आरंभ भी हो गया। यह आठवें द्वापर के बाद का कलियुग था। काल के चलते-चलते इस पृथ्वी पर शासन एक चोल राजा के हाँथों में आया।

कोल्हापुर में जो वास कर रही थीं, उस श्री महालक्ष्मी ने अनुभव किया कि श्री महाविष्णु वैकुण्ठ छोडकर एक वल्मीक में वेंकटाचल पर तपस्या करते हुए रह रहे

हैं। क्षण भर के लिए आवेग और क्रोध में आकर वे स्वयं वैकुण्ठ छोड आयी हैं। इसका पश्चात्ताप भी उन्हें होने लगा। परन्तु अपने निर्णय पर उन्होंने अटल रहना ही चाहा। पर वे चुप नहीं रह सकी। एक ग्वालिन का रूप धारण कर चोल राजा की रानी के महल के पास टहलने लगीं। सोचने लगीं कैसे मैं चोल राजा और रानी को खुश करूँ? ब्रह्म ने माँ लक्ष्मी देवी का मन समझा तथा उनके मनोभावों को पहचाना। ब्रह्म तो उनके पुत्र ही हैं न! उन्होंने एक गाय का रूप धारण किया। शिव जी एक बछडा बन गये। दोनों लक्ष्मी के सामने आये। गाय और बछडे को लेकर ग्वालिन (लक्ष्मी देवी) महल के पास गयीं। ब्रह्म और शिव पर महालक्ष्मी का अमित विश्वास था। अवश्य उनसे अपने पति को दूध के रूप में आहार मिलेगा। उनकी सही देखभाल होगी। उधर चोल रानी भी अपनी संतान के लिए दूधवाली अच्छी गाय चाहती थी। गाय और बछडे उन्हें बहुत पसंद आये। राजा से कहकर ग्वालिन से गाय और बछडे को खरीदा। रानी के हाथों इनकी अच्छी देखभाल होगी, इस विश्वास के साथ लक्ष्मीदेवी कोल्हापुर वापस लौट गयीं।

रानी ने गाय और बछडे को राजा की गोशाला में भिजवाया। राजा की गोशाला में दो हजार गायें थीं। रानी द्वारा भेजी गयी गाय को अच्छी तरह देखभाल करने के आदेश के साथ गोशाला में इन्हें भेजा गया। अन्य पशुओं के साथ गोपालक नयी गाय को चराने हर दिन वन ले जाने लगा। 'कपिला', गाय रूप धारी ब्रह्म रोज वल्मीक के पास पहुँचकर विष्णु के लिए दूध की धारा बहाने लगे। बिल तक जाना और दूध गिराना किसी की नजर में नहीं पडा। विष्णु रोज दूध पीते थे। रानी ने कपिला गाय का दूध न देना पहचाना। क्योंकि वे उसी गाय की दूध अपनी संतान के लिए चाहती थी। गोपालक को बुलाकर खरी - खोटी सुनायीं। दूसरे दिन गोपालक ने उस गाय का पीछा किया। उसका वल्मीक के पास जाना, बिल में दूध की धाराएँ गिराना सब देखा। गोपालक गुस्से में आ गया। उसके हाथ में एक कुल्हाडी थी। उसे गाय की ओर फेंकी। तब विष्णुजी ने बिल से बाहर आकर उसे बचाते हुए चोट अपने सर पर ली। भगवान ने सोचा कि 'गाय मुझे हर दिन अपना दूध पिला रही है। यह मेरी माता समान है। इसकी मृत्यु मैं सह नहीं सकता हूँ।' कुल्हाडी उनके सिर पर लगते ही उनके सिर से रक्त तूफानी वेग से ऊपर उछला। रक्त की फव्वारा हो गयी। इस आश्चर्यजनक दृश्य को गोपालक ने देखा और लुढक कर जमीन पर गिर पडा। गिरते ही उसके प्राण हवा में मिल गये।

गाय ने गोपालक को गिरकर - मरते देखा। वह राजसभा की ओर दौड चली। चोळ राजा उस समय अपनी दरबार में थे। सभा में राजा के सामने गाय जमीन पर गिरकर लोटने लगी। राजा को देखकर जोर से रंभाने लगी। फिर खडी हो गयी। कुछ कदम पीछे रखी। राजा गाय की चेष्टाओं को देखकर आश्चर्यचकित हो गथा। अपने नौकरों को समाचार पाने के लिए आदेश दिया। वे पहाड पर गये। वल्मीक के पास पहुँचकर आसमान की ओर फव्वारे

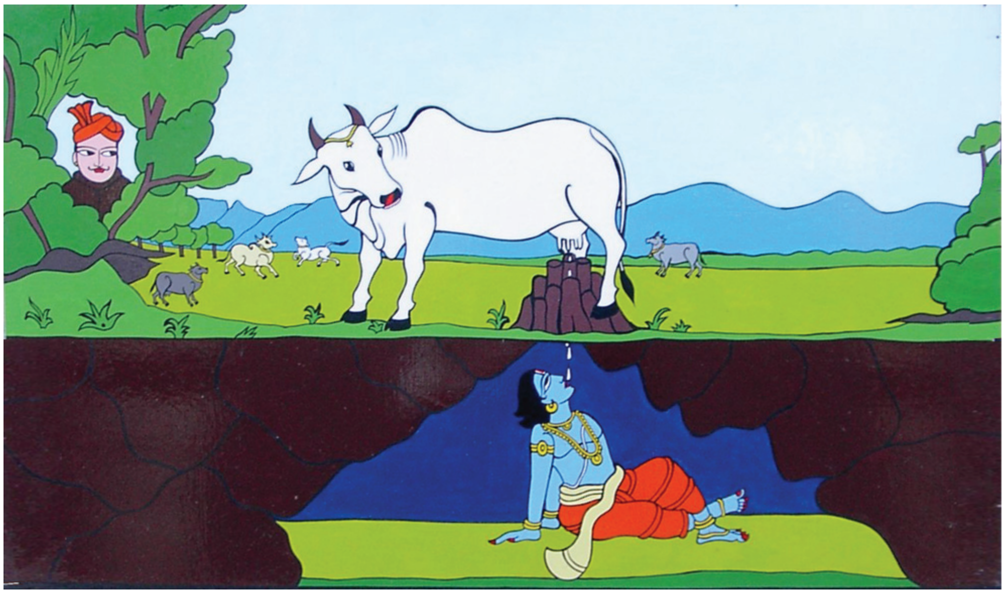

की तरह ऊपर उडननेवाली रक्त धाराओं को देखा। नौकर तुरंत राजा के पास दौड आये। उस भयंकर दृश्य के बारे में राजा से कहा। तुरन्त चोळ राजा पालकी में बैठकर वल्मीक के पास पहुँचे। भयानक दृश्य को देखकर अचंभा रह गये। राजा, अपने मंत्रियों से बात करने लगे। बस, इतने में भगवान स्वयं वल्मीक से बाहर निकले। वे तब शंख और चक्र धारण किये हुए थे। राजा को संबोधित कर गरजते हुए कहा - ''हे राजा! सुन! मैंने इस बिल का शरण लिया था। मेरी न कोई माता है और न ही पिता। मैं अकेला हूँ। सब से दूर हूँ। यह करुणामयी गाय मुझे निरंतर दूध पिलाती रही है। यह मेरी माता है। आज यह गोपालक इसे मारने पर उतरा था और गाय के सिर पर कुल्हाडी फेंकी। उसे रोकने मैंने सिर उठाया। कुल्हाडी मेरे सिर पर लगी। उसने पाप किया है। अपने पाप को अपनी आँखों से देखकर गिर कर मर गया। गोहत्या का पाप उसे लगा है। तुम्हें भी उसके पाप को बाँट कर सहना होगा। क्योंकि वह तुम्हारा नौकर है। मुझे मारने का अपराध भी भोगना होगा। इसलिए ''मैं तुमको भूत बन जाने का शाप दे रहा हूँ।'' शाप सुनकर राजा अवाक् रह गये। कुछ ही क्षणों में संभलकर भगवान के सामने प्रणमित हुए। उठकर आँसुओं की धारा बहाने लगे। गद्गद् हो भगवान से हाथ जोडकर कहा - ''हे भगवान! मैंने जानबूझ कर कोई अपराध नहीं किया है। कोई घातक योजना नहीं बनायी। मेरा इसमें कोई अपराध नहीं है। बिना किसी कारण के मुझे दोषी ठहराना कहाँ तक उचित है, प्रभू! यह मेरे लिए असहनीय शाप है।'' विष्णु भगवान ने राजा पर दया की और कहा- ''हे राजा! मैं अपने शाप को वापस नहीं ले सकता। दिन भर की घटनाओं ने मेरी इस प्रकार की मानसिकता बनायी है। तुम को हद से अधिक दुःख और ताप सहना पडा। मुझे भी इस पर खेद है। आपके प्रति मेरे हृदय में छिपे प्रेम को भी मैं विस्मृत नहीं कर सकता। कलियुग तक इस शाप को भोगना होगा। तुम्हें कलियुग में एक उदारचेता राजा का जन्म होगा। उनका नाम आकाशराजा होगा। वे अपनी पुत्री पद्मावती का विवाह मुझसे करेंगे। उस समय एक रत्न जडित किरीट (मुकुट) हर शुक्रवार को छः घटिकास (2 घंटे और 24 मिनट) के समय तक मेरे सिर पर धारण करेंगे। उस समय मेरी आँखों से आनंद भाष्प धरती पर गिरेंगे। तब उन्हें देख पाओगे। उसी समय तुम्हारा शाप मिटेगा। तुम अतुलित आनंद पाओगे।'' चोळ राजा भूत बन गये।

भगवान विष्णु ने घाव का तीव्र क्लेश अनुभव किया। देवगुरु बृहस्पति को याद किया। वे आये। उनको अपने घाव के बारे में बताया। शीघ्र उपशमन के उपाय कहने के लिए कहा। बृहस्पति ने साथ लाये रसायन द्रव्य का लेप किया। कुछ सुश्रूषा की। उपयुक्त औषधियों और जडी बूटियों को ढूँढ लानेवाला कोई नहीं था। उनके बारे में बताकर बृहस्पति चले गये। विष्णु स्वयं बृहस्पति द्वारा बतायी गई ओषधियों को ढूँढने वन में निकले।

उसी समय वृषभासुर संहारक वराहस्वामी भूदेवी समेत पर्वत श्रेणियों, गुफाओं आदि को देखते घूमते-घूमते चले। उसी समय उन्हें वेंकटाद्रि का स्मरण आया। उस ओर चले। उसी अंचल में विष्णु भगवान भी जडीबूटियों के लिए ढूँढ रहे थे। लेकिन वे सामान्य मानव के रूप में थे। मानव रूप में विष्णु को वराह स्वामी ने राक्षस समझा। उनसे भिडने के लिए तैयार हो गये। वराह स्वामी ने अपने शरीर को झटकाकर बहुत बडा किया। भयंकर रूप से घुरघुराया। विष्णु भगवान कुछ पीछे हटकर एक झाडी की आड में छिपे। वराह देव ने उनका पीछा किया। विष्णु ने उनके सामने आँसू बहाया। वराह ने उनको देखकर पहचान लिया। वे समझ गये कि उनके सामने मानव रूप में जो गोचर है, वे भगवान विष्णु ही हैं। अपनी भ्रांत धारणा के लिए पछताते हुए उनसे वराह ने वैकुण्ठ के बारे में पूछा। उन्होंने यह भी पहचाना कि उनके वक्षःस्थल पर महालक्ष्मी नहीं है। यह भी पूछा कि वे क्यों मानव रूप में यहाँ घूम रहे हैं। उनके सिर पर घाव क्यों है? क्यों वे एक झाडी के पीछे छिपे? क्यों आँसू गिराये? क्यों साहस के साथ सामने खडे नहीं हुए? ये सब क्रीडाएँ क्यों? लीला क्या है?

क्रमशः

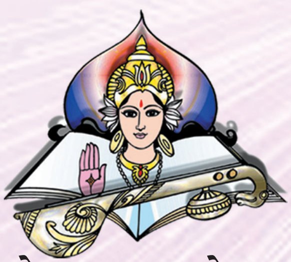

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

षोडशः पाठः - सत्रहवाँ पाठ

अन्नम् = चावल	पुरा = पुराना, प्राचीन	घृतम् = घाव(घी)
चिरम् = दीर्घकाल	आलस्यम् = देर	अर्थम् = अर्थ, भाग्य
कुर्युः = वे करना चाहिए	कुर्यात् = करना चाहिए	कुर्याम = हमें यह करना चाहिए

प्रश्न : (अ)

1. अद्य पाकं के कुर्युः?
2. गृहे घृतं नास्ति।
3. तटाके जलं नास्ति।
4. आलस्यं करोषि किम्?
5. त्वं तत्र चिरं आसीः किमर्थम्?
6. अस्मदग्रजार्थं अहं तत्रासम्।
7. देवः पुरा प्रथमं जलं अकरोत्।
8. वयं पाकं सम्यक् कुर्याम।
9. घृतं नास्ति चेत् शाकं कथं कुर्याम?
10. अस्मद्गृहे युष्मद् जनकः तूष्णीमेव आलस्यं करोति; त्वमपि अत्रासि किं? शीघ्रं स्नानं कुरु।

जवाब : (अ)

1. आज खाना कौन बनाता है?
2. घर में घी नही है।
3. पूल में पानी नही है।
4. देर करते हो?
5. आप इतने लंबे समय से वहाँ क्यों है।
6. हमारे अग्रजनि केलिए वहाँ हूँ।
7. भगवान ने पहले पानी बनाया।
8. हम खाना अच्छी तरह से बनाते हैं।
9. बिना घी के कैसे पकाते हैं।
10. हमारे घर में आपके पिताजी चुप्पी देर करता है। तुम यहाँ भी क्या कर रहे हो? जल्दी से नहा लें।

प्रश्न : (आ)

1. आज खाना कौन बनाते है?
2. मुझे यह आपकेलिए स्वयं करना है।
3. यदि नहीं तो कौन करता है?
4. आपका पिताजी।
5. क्या वे सब अभी तुम्हारे घर में हैं?
6. कुछ भी नहीं है; वैसे ही हो।
7. आपके बच्चे हमारे घर में चावल के लिए ढूंढ रहे हैं।
8. यदि ऐसा है तो आप थोड़ा यहाँ रहो।
9. क्या आप बिस्तर पर हैं?
10. चुप रहो।

जवाब : (आ)

1. अद्यः पाकं कः करोति?
2. युष्मदर्थं अहमेव करोमि।
3. नो चेत् कः करोति?
4. युष्मत्पिता।
5. अद्य ते सर्वे युष्मद् गृहे सन्ति वा?
6. किमपि नास्ति तथैव भवतु।
7. युष्मद् पुत्राः अस्मद् गृहे अन्नार्थं सन्ति।
8. एवं वा, यूयं किञ्चिदत्र भवन्तु।
9. यूयं मञ्चे सन्ति वा?
10. तूष्णीं भव।

जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

मेष राशि - मास फल सामान्य रहेगा। कार्यों में सकारात्मक प्रगति, विरोधियों पर दबाव, शत्रु विजय, व्यापारिक सफलता, सन्तान सुख, सर्वतोमुखी विकास संभव होगा। छात्रों के लिए प्रगतिशील, आर्थिक विकास, कृषि कार्यों में अनुकूलता। दाम्पत्य सुख।

वृषभ राशि - पूर्व में उत्पन्न समस्याओं का समाधान, प्रभाव प्रताप की वृद्धि, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, शैक्षणिक सफलता, रोजी-रोजगार में लाभ। संतान सुख, यात्रा में रुचि, राजकीय पक्ष से परेशानी। पारिवारिक सुख-शांति। अपनों का सहयोग पूर्ण रहेगा।

मिथुन राशि - मिलाजुला असर दिखेगा, स्वास्थ्य चिन्ता, नेत्र विकार, उदर वेदना। राजकीय सम्मान सहायता प्राप्ति की सम्भावना। गृहस्थ जीवन सुखी, ज्ञान वृद्धि, संतान सुख, व्यावहारिक जीवन में संयम जरूरी, कार्यों में सफलता। व्यापार में अनुकूलता।

कर्कट राशि - मासफल मध्यम है। स्वास्थ्य सामान्य, रचनात्मक प्रवृत्ति। धन का अतिव्यय, सामाजिक विकास, निर्माण कार्यों में प्रगति, उच्चाधिकारियों का सहयोग। दाम्पत्य सुख-शांति में बाधक, शैक्षणिक सफलता। शुभ कार्यों में व्यय, वाहन सुख।

सिंह राशि - स्वास्थ्य के साथ ही परिवार के प्रति चिन्तित रहेंगे। विद्या में प्रगति, रोजी-रोजगार लाभप्रद रहेगा। शुभ विचारों का उदय होगा। यात्रा में परेशानी, सहयोगियों से तनाव, कार्यों में गतिरोध। साधु समागम, अध्ययन में रुचि बढ़ेगी। विशिष्ट जनों से सम्पर्क का लाभ।

कन्या राशि - सकारात्मक परिवर्तन, लाभ के अनेकानेक अवसर मिलेंगे। व्यावसायिक बाधाओं का शमन, सामाजिक विकास, गृहस्थ जीवन सुखी। राजकीय सम्मान-सहयोग की प्राप्ति, रोग-ऋण-शत्रुबाधा से मुक्ति। धर्म-कर्म में रुचि, विद्या-बुद्धि का विकास, यात्रा सफल।

तुला राशि - दैनन्दिन जीवन सन्तुलित और सुखानुभूति वाला रहेगा। रचनात्मक कामों में रुचि, कार्यक्षेत्र में सीमित सफलता। स्वास्थ्य में उलझन, आर्थिक दृष्टि से परेशानि, दाम्पत्य जीवन में कटुता। उद्योग-व्यापार सामान्य रहेगा।

वृश्चिक राशि - कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, आरोग्य सुख, छात्रों के लिए सफलतादायक, राजनेताओं और सामाजिक लोगों का सम्पर्क विस्तार। सकारात्मक व्यय, व्यावसायिक यात्राएँ सफल होंगी। धार्मिक मनोवृत्ति, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति।

धनु राशि - स्वास्थ्य सुख सामान्य रहेगा। काम धन्धों में रुकावट, पारिवारिक मतैक्य भंग होगा। आर्थिक संतुलन के लिए विशेष प्रयास करना होगा। विरोधियों पर दबाव, विद्या बुद्धि-प्रतिभा की स्वीकृति। संतान सुख। पारिवारिक जीवन उल्लासपूर्ण।

मकर राशि - मिला-जुला असर दिखेगा, उदर विकार, पैर में पीड़ा, मानसिक उद्विग्नता। सकारात्मक बढ़ाने पर अनेक परेशानियों से मुक्ति। सन्तान पक्ष की चिन्ता, सामान्य द्रव्य लाभ। व्यापारिक विस्तार पर ध्यान केन्द्रित करें तो अपेक्षित सफलता, वाहन चलाने से परहेज करें।

कुम्भ राशि - मासफल मध्यम है। स्वास्थ्य सामान्य, विचारों की दैन्यता दूर कर सफलता पा सकेंगे। पारिवारिक दायित्व की पूर्ति, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, रोजी-रोजगार में अनुकूलता। राजकीय पक्ष का सहयोग, व्ययाधिक्य किन्तु आमदनी में वृद्धि नहीं। यात्रा सुखद।

मीन राशि - दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी। वाणी-व्यवहार की कुशलता से अभीष्ट सिद्धि, इष्ट मित्रों का सहयोग, मानसिक शारीरिक व्यथा। इच्छा विरुद्ध कार्य का सम्पादन। शैक्षणिक सफलता। रोजी-रोजगार में संलग्नता हित में होगा। संगीत, साहित्य, ललित कला में रुचि बढेगी।

आयुर्वेद

भिण्डी - सब्जी से ज्यादा

- डॉ.सुमा जोषी, मोबाइल - 9449515046.

भिण्डी एक प्रसिद्ध सब्जी है। यह पित्त और वात दोष को सन्तुलित करती है। यह शीतलक है। इसको सर्दी, खांसी कम पाचन शक्तिवाले स्थितियों में उपयोग न करें। क्योंकि यह कफदोष को बढ़ाता है। इसमें फाइबर पर्याप्त मात्रा में होता है। इसलिए इसका प्रयोग बवासीर में महत्व रखता है।

कच्चा भिण्डी

रस - मीठा

गुण - भारी (म्यूसिलेज होता है। इसीलिए कम पाचन शक्तिवालों के लिए सिफारिश नहीं किया जाता है।)

वीर्य - शीत

विपाक - पाचन के बाद मीठे में परिवर्त्तन

दोष-प्रभाव - वात व पित्त सन्तुलन, कफ को बढ़ाता है।

भिण्डी - पका हुआ, बिना नमकवाला

रस-स्वाद - मीठा

गुण - बहुत भारी नहीं

वीर्य - शीत

विपाक - मधुर रस/मीठा

दोष-प्रभाव - वात, पित्त सन्तुलन, कफ को सामान्य रखता है।

आरोग्य में उपयोग

जीर्ण पेचिश (दस्त) – गम्भीर पेचिश में, अन्त की सूजन के कारण मल में बलगम और रक्त दिखाई देता है। भिण्डी अपनी ग्राही और शोषक गुण के कारण गति की आवृत्ति को नियमित करती है।

मधुमेह में - खाने में भिण्डी को शामिल करने पर बढ़े हुए वात को शान्त करने और खराब पाचन को सही करने में मदद मिलती है। यह इंसुलिन के कार्य में सुधार करता है और रक्त शर्करा के स्तर को नियन्त्रित करता है। 2-4 भिण्डी लें और उसका आगे का भाग काट लें। एक गिलास गुनगुना पानी में कटे हुए भाग की तरफ से रात भर के लिए डुबोकर रखें। अगली सुबह भिण्डी को निकालकर पानी पी लें। ब्लड शुगर लेवल को बनाए रखने के लिए रोजाना दोहराये।

मूत्रमार्ग के संक्रमण में भिण्डी का सेवन करने से पेशाब के दौरान होनेवाले दर्द को कम करने में मदद मिलती है और मूत्र के प्रवाह में वृद्धि होती है। क्योंकि इसमें मूत्रवर्धक गुण होता है। ऊपर बताये हुए तरीके से ही इसका प्रयोग करना है। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से भिण्डी का सेवन बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सन्तुलित करता है। विभिन्न हृदयरोगों को रोकने में सहायक है।

भिण्डी में विटामिन-बी, सी और फोलेट होता है जो जन्म दोषों को रोकने में मदद करता है और बच्चे के समुचित विकास में मदद करता है। फोलेट एक महत्वपूर्ण पोषक तत्त्व है जो भ्रूण के मस्तिष्क की वृद्धि और विकास को बढ़ाता है। जले हुए घांवों में – भिण्डी का 20 एम.एल. ताजा रस और 100 एम.एल. चूने का पानी को अच्छी तरह से मिलाया जाता है। इस रस को जलने पर लगाया जाता है। इससे जलन तुरन्त कम हो

जाता है। यदि जलन चरम पर है, तो जले हुए भागों को इस घोल में डुबोया जा सकता है। लेकिन मिश्रण की मात्रा अधिक चाहिए।

सिर की जूं और रूसी के लिए –30-40 सूखे बीजों को अच्छी तरह से पीसा जाता है। इसे तिल के तेल या नारियल के तेल में एक दिन के लिए भिगोया जाता है। अगले दिन से 5-10 मिनट के लिए आग पर गर्म किया जाता है। स्वयं ठण्डे होने पर स्टोर करके रख लें। यह तेल ''गुनी आदिवासि'' लोगों की एक प्रथा है। महाराष्ट्र और राजस्थान के कुछ प्रदेशों में भी इसका उपयोग किया जाता है।

3-4 भिण्डी को दहि और ऑलिव तैल के साथ पेस्ट बना लें। 7-8 मिनट तक चेहरे पर लगायें। बाद में अच्छे से धो लें। हफ्ते में 2-3 बार करें। इससे चेहरा स्वच्छ और कोमल हो जायेगा।

भिण्डी को बीच में काट कर (7 से 8) एक कप पानी में उबाल लें। 1/4 तक पानी बच जायें तो पानी को छान लें। उस पानी में ऑलिव आयिल और विटामिन-ई मिलायें। बालों में लगाकर एक घण्टे के बाद शैम्पू करें। इससे बाल चमकदार हो जायेंगे। वजन घटाने के आहार में भिण्डी को शामिल किया जा सकता है। इसमें फाइबर ज्यादा और कैलोरी कम होता है।

बायोटेक्नोलॉजी लेटर्स के जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया है कि भिण्डी 65% तक स्तन कैंसर की कोशीकाओं को बढ़ने से रोक सकती है। इसके अतिरिक्त, इसके अघुलनशील फाइबर कोलो रेक्टल कैंसर के खतरे को कम करता है।

न्यूट्रीशन जर्नल में प्रकाशित एक अन्य शोध में पाया गया है कि भिण्डी में पाये जानेवाले यांटी-आक्सीडेंट अन्य सब्जियों की तुलना में काफी अधिक होते हैं और यह शरीर को फ्री रेडिकल्स से होनेवाले नुकसान से सुरक्षित रख सकता है। यह आगे शरीर में कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकता है।

भिण्डी में मौजूद यांटी-ऑक्सीडेंट उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करके जवानी त्वचा दे सकते हैं। यह शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और संक्रमणों से बचाता है।

चूंकि भिण्डी में अधिक मात्रा में विटामिन-के, फोलेट और आयरन होता है एनीमिया और उसके उपचार में लाभदायक है। यह लिवर के लिए लाभदायी है।

उपयोग न करें

जो लोग मेटफार्मिन ले रहे हों वे इसका प्रयोग न करें। क्योंकि मेटफार्मिन शर्करा स्तर को नियन्त्रित करता है और भिण्डी इसके प्रभावों को कम कर सकता है।

मौजूदा पित्त और गुर्दे की पथरीवाली शिकायत के लोग इसका प्रयोग न करें। यहाँ पर सिर्फ जानकारी मात्र के लिए बताया गया है। संशय आने पर तत्व आयुर्वेद वैद्य की सलाह लेना जरूरी है।

नीतिकथा

जीवन का रहस्य

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन

मोबाइल - 9443322202

एक गाँव में राघव और राकेश नामक दो मित्र रहते थे। राघव एक किसान था और वह अपना खेत जोतकर अनाज पैदा करता था। वह रोज बडे सबेरे घर से निकलता और अपने खेत में काम करके शाम को सूर्यास्त के बाद अपना घर वापस लौटता था। वह अपने कठोर परिश्रम से जो मिलता उससे अपने परिवार को संभालता था। वह इस बात से दुःखी था कि उसे संतुष्ट जीवन नहीं मिला है।

राकेश उसी गाँव में रहने वाला एक सोनार था। वह सोने का आभूषण बनाता था। लोग सोना देते तो वह उससे उनके मन पसंद के आभूषण बनाकर देता था। वह अपने ऐसे काम से जो मिलता उससे अपने परिवार को संभालता था। वह इस पर दुःखी था कि उसे सुखमय जीवन की प्राप्ति नहीं हुई है। इस प्रकार दोनों मित्र अपने धंधे से लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे, पर उन्हें अपने जीवन के प्रति कोई संतोष की भावना नहीं थी। इसलिए जब वे दोनों एक साथ मिलते थे तब वे एक दूसरे से अपना दुःखडा रोते थे।

एक बार उस गाँव में स्वामी दयानंद नामक एक महान साधु आए थे। गाँव के लोग उनके दर्शन करने बडी संख्या में जाते और उनके आशीर्वाद से खुश होते थे। साधु के आगमन की बात उन दोनों मित्रों को भी मालूम हुई। उन्होंने निश्चय किया कि अगले दिन शाम को स्वामी से मिलकर अपनी वेदना को सुनाएँगे और उससे मुक्त होने के लिए कोई उपाय पूछेंगे।

अगले दिन राघव अपने मित्र राकेश के यहाँ जाकर उसके साथ स्वामीजी से मिलने गया। जब वे दोनों स्वामी के आश्रम में गए थे तब वे भगवद् भजन में लीन थे। दोनों मित्र वहीं बैठकर उनके साथ भगवान के भजन करने लगे। भजन के बाद सबको भगवान का प्रसाद बाँटा गया। दोनों मित्रों ने बडी श्रद्धा से उस प्रसाद को स्वीकार कर लिया। उसके बाद दोनों ने स्वामीजी के निकट जाकर उनको बडी नम्रता से नमस्कार किया।

स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया और पूछा, ''वत्स! बताओ तुमको क्या चाहिए?'' तब राघव और राकेश ने अपना परिचय देकर कहा कि अपनी वेदना को दूर करने का उपाय बताए। यह सुनकर स्वामीजी ने राघव को देखकर पूछा, ''बताओ तुम क्या काम कर रहे हो?''

स्वामीजी को जवाब देते हुए राघव ने कहा, ''मुनिवर! मैं एक किसान हूँ। मैं अपने खेत में कठोर परिश्रम करता हूँ, पर मुझे संतोष का जीवन प्राप्त नहीं हुआ है। मैं अपने परिश्रम से लोगों की भूख मिटाता हूँ, पर मेरे जीवन में आनंद नहीं है।''

यह सुनकर स्वामीजी ने कहा! ''अच्छा वत्स, मैं तुम्हारे दुःख को दूर करने का उपाय बाद में बताता हूँ।'' उसके बाद स्वामीजी ने राकेश को देखकर पूछा कि तुम क्या कर रहे हो?

यह सुनकर उसने कहा, ''स्वामीजी! मैं एक सोनार हूँ। मैं गाँव के लोगों को गहने बनाकर देता हूँ। मैं अपने कठोर परिश्रम से सोने को सुन्दर आभूषण के रूप में बनाकर देता हूँ। मेरे कार्य से लोग खुश होते हैं। पर मेरे जीवन में कोई खुशी नहीं है।

मुझे सुखमय और सुविधामय जीवन की प्राप्ति नहीं हुई है। कृपया आप मेरे दुःख को दूर करने का उपाय बताइए।''

यह सुनकर स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अच्छा, मुझे ऐसा लगता है कि तुम दोनों की समस्याएँ बराबर हैं। अब मैं आप दोनों को जीवन के रहस्य के बारे में बताता हूँ।'' उसके बाद स्वामीजी ने दोनों को देखकर कहा, ''तुम दोनों अपने काम से लोगों की माँग की पूर्ति

करते हो। तुम में एक तो खेत में परिश्रम करके लोगों के अन्न की आवश्यकता की पूर्ति करते हो। दूसरे तो अपने काम से सोने से सुन्दर आभूषण बनाकर लोगों के मन को प्रसन्न करते हो। इसलिए तुम दोनों ने लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का काम कर रहे हो। अब मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ। यदि तुम्हारे काम के बिना वे सब चीजें लोगों को अपने आप मिल जाए तो तुम लोग क्या करोगे?''

यह सुनकर दोनों ने एक साथ कहा, ''कोई काम न होने पर हमें भीख माँगकर अपना जीवन बिताना पडेगा।''

अब स्वामीजी ने कहा, ''हाँ सत्य है। इस दुनिया में ऐसी माँग होने के कारण ही तुम लोगों को नौकरी मिलती है। उनकी माँग की पूर्ति करने की क्षमता होने के कारण ही लोग तुम्हारे पास आते हैं और तुम लोगों को नौकरी मिलती है। उससे तुम अपने परिवार को संभालते हो। इसलिए तुममें होती ऐसी क्षमता के प्रति गर्व का अनुभव करना चाहिए।''

स्वामीजी ने आगे कहा, ''एक बात याद में रख लेना। लोगों की माँग को पूर्ति करने वाले कार्य को जो व्यक्ति बडा भाग्य समझता है, वह सदा प्रसन्न रहता है। इसके ठीक विपरीत जो उसे बडा भार समझता है वह तुम लोगों की तरह असंतुष्ट रहता है।

भगवान द्वारा दिया गया जीवन का रहस्य यही है। जो इस रहस्य को साफ समझता है वह दुःख में भी सुख का अनुभव करता है।''

स्वामीजी की बातों से अब दोनों मित्रों की आँखें खुल पड़ीं। वे दोनों स्वामी को नमस्कार करते हुए वहाँ से निकल पड़े। अब उन दोनों के मन में अपने काम के प्रति बड़े गर्व का अनुभव हुआ और उनके जीवन में भी आनंद अंकुरित होने लगा।

'क्विज'

- एन.प्रत्यूषा

१. तिरुमल क्षेत्र का पहला नाम क्या था?

अ. आदिवराह क्षेत्र आ. जगन्नाथ क्षेत्र इ. पुष्कर क्षेत्र ई. श्री गिरि क्षेत्र

२. कबीर का जन्म कहाँ हुआ था?

अ. प्रयाग आ. पंजाब इ. काशी ई. उत्तराकांड

३. अयोध्या नगर किस नदी के तट पर है?

अ. गंगा आ. सरयु इ. नर्मदा ई. कृष्णा

४. राजा दशरथ ने संतान प्राप्ति के लिए कौन सा याग किया?

अ. अश्वमेध आ. सर्पयाग इ. पुत्र कामेष्ठी ई. कुछ भी नहीं

५. महाभारत युद्ध में कितने अक्षौहिणी सेना मिट गयी?

अ. १८ आ. १९ इ. १७ ई. २०

६. कृपाचार्य के पिता का नाम क्या है?

अ. शंतन आ. भरद्वाज इ. शरद्वान ई. गौतम

७. श्रीनिवास सेतु का पहला नाम क्या था?

अ. गरुड वारधी आ. अश्व वारधी इ. मयुर वारधी ई. पवन वारधी

जवाब

१. अ २. इ ३. आ ४. इ ५. अ ६. इ ७. अ

चित्रकथा

नम्माल्वार

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

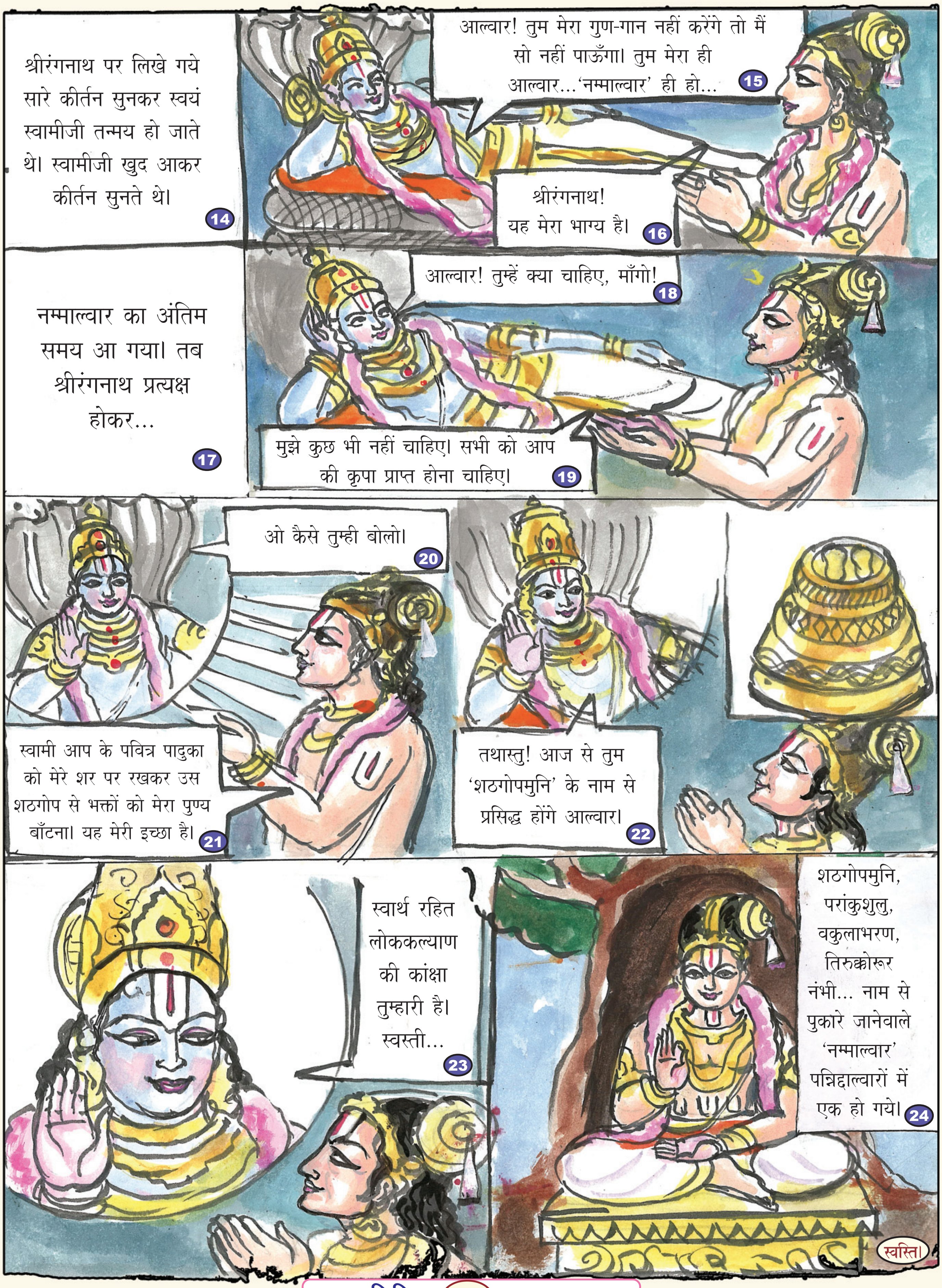
श्रीरंगनाथ पर लिखे गये सारे कीर्तन सुनकर स्वयं स्वामीजी तन्मय हो जाते थे। स्वामीजी खुद आकर कीर्तन सुनते थे। 14
आल्वार! तुम मेरा गुण-गान नहीं करेंगे तो मैं सो नहीं पाऊँगा। तुम मेरा ही आल्वार...'नम्माल्वार' ही हो... 15
श्रीरंगनाथ! यह मेरा भाग्य है। 16
नम्माल्वार का अंतिम समय आ गया। तब श्रीरंगनाथ प्रत्यक्ष होकर... 17
आल्वार! तुम्हें क्या चाहिए, माँगो! 18
मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। सभी को आप की कृपा प्राप्त होना चाहिए। 19
ओ कैसे तुम्ही बोलो। 20
स्वामी आप के पवित्र पादुका को मेरे शर पर रखकर उस शठगोप से भक्तों को मेरा पुण्य बाँटना। यह मेरी इच्छा है। 21
तथास्तु! आज से तुम 'शठगोपमुनि' के नाम से प्रसिद्ध होंगे आल्वार। 22
स्वार्थ रहित लोककल्याण की कांक्षा तुम्हारी है। स्वस्ती... 23
शठगोपमुनि, परांकुशुलु, वकुलाभरण, तिरुक्कोरूर नंभी... नाम से पुकारे जानेवाले 'नम्माल्वार' पन्निद्दाल्वारों में एक हो गये। 24
स्वस्ति।

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीमहाविष्णु	अ) मयूर
2) शिवजी	आ) मूषिक
3) श्री कुमारस्वामी	इ) नंदी
4) श्री गणेश	ई) हंसा
5) माँ सरस्वती	उ) गरुड़ा

1) उ 2) इ 3) अ 4) आ 5) ई

श्री वेंकटेश्वरस्वामी का स्तोत्र

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये
निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेंकट निवासाय
श्रीनिवासाय मंगलम्।।

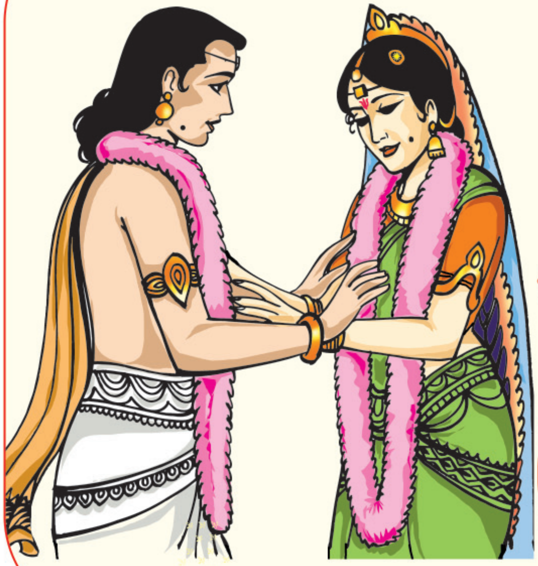

चित्र में अंतर खोजे!

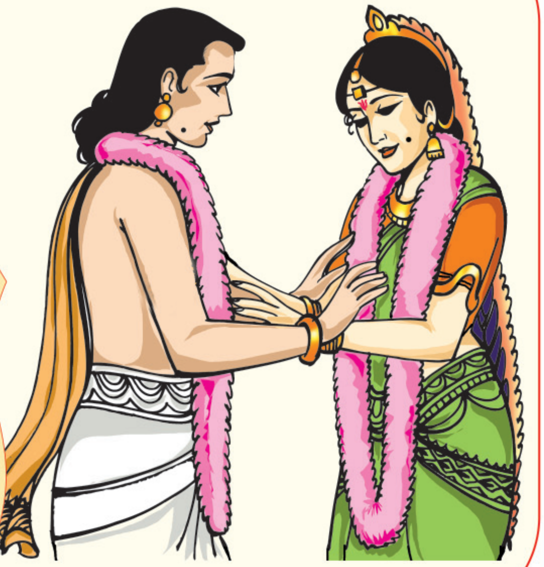

1) सेहरा
2) वर का भुज कंकण
3) धोती का छोर
4) सोने की चँद्र बंकिमाँ
5) वधु का भुज कंकण
6) परदा नशीन
7) कमर-बंद का किनारे

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 05.05.2022 को तिरुपति में स्थित श्री वेंकटेश्वर इन्स्टिट्यूट ऑफ क्यान्सर, अस्पताल के प्रारंभोत्सव कार्यक्रम में आं.प्र. मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने भाग लिया। इस में अन्य उच्च अधिकारीगण ने भी भाग लिया।

दि. 05.05.2022 को तिरुपति में स्थित श्री पद्मावती छोटे बच्चों का सूपर स्पेषलिटि अस्पताल के शुभारंभ, शिलान्यास रखते हुए और भूमि पूजा में भाग लेते हुए आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी और इस में अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 05.05.2022 को तिरुपति में स्थित 'श्री वेंकटेश्वर भक्ति चॉनल ऑन लाइन रेडियो लोगो' का आविष्कार और 'श्रीनिवाससेतु' मार्ग का शुभारंभ करते हुए माननीय आ.प्र. मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी, इस कार्यक्रम में मंत्रीगण और अन्य उच्च अधिकारीगण ने भी भाग लिया।

दि. 05.05.2022 को श्रीनिवासमंगापुरम्, श्रीवारिमेट्टु (पैदल) मार्ग का पुनःप्रारंभ करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी। इस कार्यक्रम में और अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

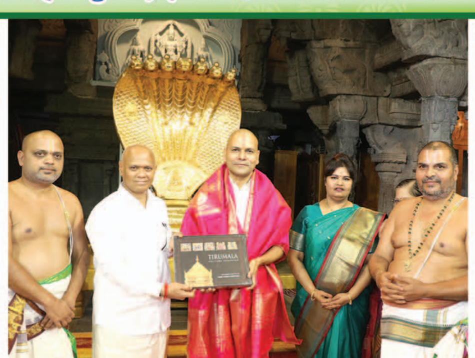

दि. 29.04.2022 को तिरुमल तिरुपति देवस्थान न्यास-मंडली के पदेन सदस्य का कार्यभार को स्वीकारते हुए आं.प्र. धर्मस्व शाखा के मुख्य सचिव श्री अनिल कुमार सिंघाल, आई.ए.एस.,

दि. 08.05.2022 को ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी (एफ.ए.सी) के पद के कार्यभार को स्वीकारते हुए श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-05-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी के ब्रह्मोत्सव
(दि. 05.06.2022 से दि. 13.06.2022 तक)